प्रेरणा विचार

RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-

मासिक

चैत्र-वैशाख, विक्रम संवत् 2082 (अप्रैल -2025)

पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

‘विमर्श भारत का’ पुस्तक विमोचन कार्यक्रम की झलकियां

भारत भूमि का टुकड़ा मात्र नहीं, बल्कि जीवन दर्शन है -दत्तात्रेय होसबाले

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने पंचशील बालक इंटर कॉलेज नोएडा के सभागार में प्रेरणा शोध संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ‘विमर्श भारत का’ पुस्तक का विमोचन किया। पुस्तक का प्रकाशन सुरुचि प्रकाशन ने किया है। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि भारत की राष्ट्रीयता के संबंध में कई विचार आए, जो टूट गया क्या वही भारत है? क्या भारत एक जमीन का टुकड़ा है? या संविधान से चलने वाला केवल एक भारत है? केवल ऐसा नहीं है, भारत एक जीवन दर्शन, आध्यात्मिक प्रतिभूति एवं दुनिया को संदेश देने वाला विश्वगुरु है।

माननीय दत्तात्रेय जी ने कहा कि प्रेरणा संस्थान पिछले कई वर्षों से समाज में वैचारिक और बौद्धिक परिवर्तन लाने का सार्थक प्रयास कर रहा है। विशेष रूप से मीडिया क्षेत्र में प्रेरणा मीडिया संस्थान का सफल हस्तक्षेप है। आज ‘विमर्श भारत का’ पुस्तक का लोकार्पण हुआ है। यह प्रेरणा संस्थान के योगदान से पिछले 4 वर्षों में विमर्श के संदर्भ में चार आयामों को निश्चित करते हुए उसके संदर्भ में संकलित और संक्षेप में चार विमर्शों का संकलित ग्रंथ है। इसमें लोक, राष्ट्र और मानव हित में क्या होना चाहिए और सही क्या है, एक महत्वपूर्ण दिशा है। इस अवसर पर इंडिया टीवी की वरिष्ठ पत्रकार मीनाक्षी जोशी को प्रेरणा सम्मान 2024 प्रदान किया गया।

विषय सूची

प्रेरणा विचार

वर्ष -3, अंक - 04

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
अशोक सिन्हा

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

बांग्लादेश के हिंदू समाज के साथ एकजुटता से खड़े रहने का आह्वान-07

पृथ्वी दिवस
खुद को बचाने का दिवस-11

संघ से मिले संस्कार और जीवन के उद्देश्य-16

संगम का तट
माँ गंगा और अंतर्मन की पुकार-24

वर्ष प्रतिपदा : विक्रम संवत बने राष्ट्रीय संवत 05
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : समाजाभिमुख कार्य 08
बिन पानी सब सून....13
अमेरिका में भारतीय मूल के खिलते फूल 14
आर्थिक न्याय और विकास के प्रेरणास्रोत....18
भगवान महावीर के उपदेशों में निहित समरसता....19
ट्रम्प प्रशासन द्वारा टैरिफ सम्बंधी लिए जा रहे निर्णयों का भारत पर प्रभाव....20
जुट गये स्वयंसेवक : आपातकाल में उदित हुआ प्रचंड जनांदोलन....22
विकसित भारत की नींव है स्वस्थ भारत....26
महाकुम्भ 2025 : आस्था के जनसमुद्र में समरसता की लहरें....28
हर त्योहार नई शुरूआत....30
हिन्दू राष्ट्र की अंगड़ाई लेता नेपाल....32
भारतीय मेधा जिन्होंने विश्व में फहराया परचम 33
नैरेटिव को न्योता देती पुस्तक....34

सत्य जीना, खोजना और स्थापित करना भारत का ध्येय

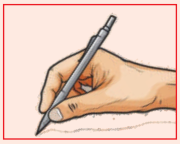

काल के प्रवाह में भी भारत की कभी संस्कृति नष्ट नहीं हुई। भारत का लक्ष्य सर्वे भवन्तु सुखिन: का रहा है। भारत सारे विश्व की मानवता के बारे में सोचता है। भारत उठेगा, विश्व का दीप स्तंभ बनने के लिए भारत को अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा और मजबूत होना पड़ेगा। हमें सत्य लिखना है, सत्य बोलना है और सत्य ही दिखाना है। हमारा ध्येय सत्य की स्थापना, खोज और जीना होना चाहिए।

वर्तमान कालखंड में भारत सामाजिक, आर्थिक और वैज्ञानिक उन्नति के साथ-साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण के महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। भारतीय कालगणना के अनुसार विक्रमी संवत् 2082 का शुभारंभ 30 मार्च से हो चुका है, जो हमारी प्राचीन परंपराओं और कालगणना प्रणाली की समृद्धि को दर्शाता है।

आज जब भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है, तब हमें अपने वास्तविक इतिहास को पहचानने, वैज्ञानिक उन्नति को अपनाने और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है।

भारत के लिए गर्व का विषय है कि भारत मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स अपने अन्य साथियों के साथ 286 दिन अंतरिक्ष में रहने के बाद 18 मार्च को पृथ्वी पर लौट आई। अपने अंतरिक्ष अभियान में उन्होंने अनेकों वैज्ञानिक एवं तकनीकी शोध किए जिनमें अधिकतर बीमारियों के उपचार से संबंधित रहे। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी वर्ष 2035 तक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने का संकल्प दोहराया। मार्च महीने की एक प्रमुख घटना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय दत्तात्रेय होसबाले जी द्वारा 10 मार्च को नोएडा में 'विमर्श भारत का' पुस्तक का विमोचन किया जाना रहा। पुस्तक में प्रेरणा शोध संस्थान, नोएडा द्वारा 2020 से 2023 तक आयोजित किए गए प्रेरणा-विमर्श कार्यक्रमों में वक्ताओं के उद्‌बोधनों का संकलन है। इस अवसर उन्होंने कहा, कि "भारत मात्र जमीन का टुकड़ा नहीं है। भारत एक जीवन दर्शन है, आध्यात्मिक प्रतिभूत है और विश्व को संदेश देने वाला विश्व गुरु है। भारत के स्व को जागृत करने के लिए उसके बारे में फैलाई गई भ्रांतियों जैसे भारत केवल एक कृषि प्रधान देश है, यहां किसी भी प्रकार का उद्योग नहीं है, भारत का गणित और विज्ञान के क्षेत्र में कोई योगदान नहीं है, आदि को मिटाना होगा। जबकि सत्य यह है कि हम किसी भी क्षेत्र में कम नहीं थे और हमारा इतिहास समृद्धि से भरा पड़ा है। हमने अपने स्वाभिमान को खोया और हमारी शिक्षा पद्धतियां नष्ट हुई। जो बाहरी आक्रांता आए उन्होंने हमारे देश का दमन किया। काल के प्रवाह में भी भारत की कभी संस्कृति नष्ट नहीं हुई। भारत का लक्ष्य सर्वे भवन्तु सुखिन: का रहा है। भारत सारे विश्व की मानवता के बारे में सोचता है। भारत उठेगा, विश्व का दीप स्तंभ बनने के लिए भारत को अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा और मजबूत होना पड़ेगा। हमें सत्य लिखना है, सत्य बोलना है और सत्य ही दिखाना है। हमारा ध्येय सत्य की स्थापना, खोज और जीना होना चाहिए"।

उत्सवों की दृष्टि से अप्रैल माह अति महत्वपूर्ण है, जिसमें भगवान श्रीराम की जयंती (रामनवमी), हनुमान जयंती, खालसा पंथ स्थापना दिवस, वैसाखी, तीर्थंकर महावीर जयंती, परशुराम जयंती, बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती तथा पृथ्वी दिवस जैसे प्रमुख उत्सव मनाए जाएंगे।

आशा है कि प्रेरणा विचार का अप्रैल अंक सुधि पाठकों की अपेक्षा पर खरा उतरेगा। आपके सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

वर्ष प्रतिपदा : विक्रम संवत बने राष्ट्रीय संवत

डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय
अंतरिक्ष वैज्ञानिक

हिन्दू पंचांग की प्रथम तिथि को 'प्रतिपदा' कहा जाता है। इसमें 'प्रति' का अर्थ है – सामने और 'पदा' का अर्थ है – पग बढ़ाना। नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल 'प्रतिपदा' से ही माना जाता है और इसी दिन से ग्रहों, वारों, मासों और संवत्सरों का प्रारंभ गणितीय और खगोल शास्त्रीय संगणना के अनुसार माना जाता है। जनमानस से जुड़ी हुई यही शास्त्रसम्मत कालगणना व्यावहारिकता की कसौटी पर सदैव खरी उतरी है। इसे राष्ट्रीय गौरवशाली परंपरा का प्रतीक माना जाता है। विक्रमी संवत किसी संकुचित विचारधारा या पंथ पर आधारित नहीं है। हम इसको पंथनिरपेक्ष रूप में देखते हैं। यह संवत्सर किसी देवी, देवता या महान पुरुष के जन्म पर आधारित नहीं, ईस्वी या हिजरी सन की तरह किसी जाति अथवा संप्रदाय विशेष का नहीं है। हमारी गौरवशाली परंपरा विशुद्ध अर्थों में प्रकृति के खगोलशास्त्रीय सिद्धातों पर आधारित है और भारतीय कालगणना का आधार पूर्णतया पंथ निरपेक्ष है।

वर्ष प्रतिपदा को महाराष्ट्र में 'गुड़ीपड़वा', आंध्रप्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में 'उगादी', जम्मू-कश्मीर में 'नवरेह', पंजाब, हरियाणा में 'बैसाखी' आदि के नाम से जाना जाता है। भारतीय संस्कृति में 'वर्षप्रतिपदा' का विशेष महत्त्व है। भगवान ब्रह्मा जी ने इसी दिन सूर्योदय के समय सृष्टि की रचना शुरू की थी।

संसार के प्राचीनतम ग्रंथ 'ऋग्वेद' में एक वर्ष में तीन ऋतुओं - शरद, बसंत और हेमंत का होना बताया गया है। ऋतुओं की उत्पत्ति अथवा परिवर्तन सूर्य के कारण होता है। सूर्य को ऋतुओं का पिता कहा गया है। इसी कारण ऋतु चक्र, संवत्सर कहलाते हैं। एक संवत्सर में पांच ऋतुएं होती हैं और ऐसे पांच ऋतु चक्रों का एक युग होता है।

चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य की भांति भारत के दक्षिणी क्षेत्र के प्रतापी सम्राट शालिवाहन ने शकों को परास्त कर भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना और विक्रम संवत के समान शक संवत की स्थापना हुई जिसे शालिवाहन संवत भी कहा जाता है। भगवान श्री राम और महाराजा युधिष्ठिर का राज्याभिषेक दिवस भी यही है। शक्ति और भक्ति के नवरात्र का प्रथम दिवस यही है। यह दिवस सिखों के दूसरे गुरु श्री अंगद देव जी की जयन्ती भी है। इस दिन स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। इसी शुभ दिन पर संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की जयन्ती है। आज यह दिन हमारे सामाजिक और धार्मिक कार्यों के अनुष्ठान की धुरी के रूप में महत्वपूर्ण तिथि बनकर मान्यता प्राप्त कर चुका है। यह राष्ट्रीय स्वाभिमान और सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण का पुण्य दिवस है। आज भी भारत में प्रकृति, शिक्षा तथा राजकीय कोष आदि के चालन-संचालन में मार्च, अप्रैल के रूप में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही देखते हैं। यह समय दो ऋतुओं का संधिकाल है। इसमें रातें छोटी और दिन बड़े होने लगते हैं। प्रकृति नया रूप धर लेती है। मानव, पशु-पक्षी, यहां तक कि जड़-चेतन प्रकृति भी प्रमाद और आलस्य को त्याग सचेतन हो जाती है। बसंतोत्सव का भी यही आधार है। प्रकृति की हरीतिमा नवजीवन का प्रतीक बनकर हमारे जीवन से जुड़ जाती है।

भारतीय कालगणना और पंचांग : एक अंग्रेज अधिकारी ने प. मदन मोहन मालवीय से पूछा कि "कुम्भ में इतना बड़ा जन सैलाब बगैर किसी निमंत्रण-पत्र के कैसे आ जाता है?" पंडित जी ने उत्तर दिया "छः आने के पंचांग से!" अपने देश के गाँवों, शहरों, वनों में, पहाड़ों पर या भारत के बाहर सैंकड़ों मील दूर विदेशों में हिन्दू कहीं भी रहे वह पंचांग जानता है। अपने त्यौहार, उत्सव, कुम्भ, विभिन्न देवस्थानों पर लगने वाले मेले सभी की तिथियां बगैर आमंत्रण, सूचना के उसे मालूम होती हैं। यहीं नहीं सौ वर्ष बाद किस दिन कहां कुम्भ होगा, दीपावली कब होगी, सूर्य एवं चंद्र ग्रहण कब होंगे, यह भी ज्योतिषी किसी समय भी बता सकते हैं।

काल की गणना दिन व रात, ऋतु तथा वर्ष के किसी न किसी रूप में प्राचीन काल से ही की जाती रही है। वर्तमान में काल की

गणना 'वर्ष' द्वारा की जाती है। परंतु प्राचीन काल में यह गणना चन्द्रमा के उदय व विकास तथा ऋतुओं के परिवर्तन द्वारा की जाती थी। संसार के प्राचीनतम ग्रंथ 'ऋग्वेद' में एक वर्ष में तीन ऋतुओं - शरद, बसंत और हेमंत का होना बताया गया है। ऋतुओं की उत्पत्ति अथवा परिवर्तन सूर्य के कारण होता है। सूर्य को ऋतुओं का पिता कहा गया है। इसी कारण ऋतु चक्र, संवत्सर कहलाते हैं। एक संवत्सर में पांच ऋतुएं होती हैं और ऐसे पांच ऋतु चक्रों का एक युग होता है। इन ऋतु चक्रों के नाम हैं- संवत्सर, परिवत्सर, इडात्सर, अनुवत्सर और उद्वत्सर। इन पांच वत्सरों का गणित द्वारा अनुसन्धान कर उनका वर्णन करना पंचांग कहलाता है। सामान्य रुप से पंचांग में तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण बताये जाते हैं। पंचांग की मदद से आसानी से यह ज्ञात हो जाता है कि किस दिन क्या तिथि या वार है, वर्ष का आरम्भ कब हुआ, इस समय सूर्य और चन्द्रमा किस स्थान पर हैं इत्यादि इन सभी तथ्यों की जानकारी पंचांग देखने से मिलती हैं।

भारत में संवतों का प्रचलन : शकों के आने के पहले वेदांग ज्योतिष के अनुसार यहां वर्ष-गणना की जाती थी लेकिन अब सूर्य सिद्धांत तथा अन्य सिद्धांत के अनुसार वर्ष गणना की जाने लगी। ई. सन् 400 के लगभग तो वेदांग ज्योतिष के अनुसार वर्ष गणना की जानी बिल्कुल बंद कर दी गई। ई. सन् 400 व 1200 के बीच सम्पूर्ण भारत में 'सिद्धांत ज्योतिष' के अनुसार पंचांग बनने लगे। शक संवत् का प्रचलन सर्वत्र हो गया। लेकिन 1200 के बाद जहां-जहां मुसलमानों का राज्य स्थापित हुआ उन्होंने लौकिक व प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए इस्लामी हिजरी सन् का प्रचलन किया। 1757 के लगभग अंग्रेजों का भारत में राज्य स्थापन होने के समय से यहां ईसवी सन् का तिथिपत्रक, जो ग्रेगरी कैलेण्डर नाम से प्रसिद्ध है, लौकिक और प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने लगा। अंग्रेजी शिक्षा के साथ भारतवर्ष में इसका इतना प्रचलन हुआ कि यह एक आदत बन गया।

कैलेंडर रिफार्म कमेटी : स्वतंत्र भारत की सरकार ने राष्ट्रीय पंचांग निश्चित करने के लिए प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. मेघनाथ साहा की अध्यक्षता में "कैलेंडर रिफार्म कमेटी" का गठन किया था। 1952 में "साइंस एंड कल्चर" पत्रिका में प्रकाशित रिपोर्ट के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं-

- ईसवी सन् का मौलिक संबध ईसाई पंथ से नहीं है। यह तो यूरोप के अर्ध सभ्य कबीलों में ईसा मसीह के बहुत पहले से ही चल रहा था।
- इसके एक वर्ष में 10 महीने और 304 दिन होते थे।
- पुरानी रोमन सभ्यता को भी तब तक ज्ञात नहीं था कि सौर वर्ष और चंद्रमास की अवधि क्या थी। यही दस महीने का साल वे तब तक चलाते रहे जब तक उनके सेनापति जूलियस सीजर ने इसमें संशोधन नहीं किया।
- ईसा के 530 वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद, ईसाई बिशप ने पर्याप्त कल्पनाएं कर 25 दिसम्बर को ईसा मसीह का जन्म दिवस घोषित किया।
- 1572 में तेरहवें पोप ग्रेगरी ने कैलेंडर को दस दिन आगे बढ़ाकर 5 अक्टूबर (शुक्रवार) को 15 अक्टूबर माना।

एक अंग्रेज अधिकारी ने प. मदन मोहन मालवीय से पूछा कि कुम्भ में इतना बड़ा जन सैलाब बगैर किसी निमंत्रण-पत्र के कैसे आ जाता है? पंडित जी ने उत्तर दिया छः आने के पंचांग से! अपने देश के गाँवों, शहरों, वनों में, पहाड़ों पर या भारत के बाहर सैंकड़ों मील दूर विदेशों में हिन्दू कहीं भी रहे वह पंचांग जानता है।

- ब्रिटेन ने इसे दो सौ वर्ष बाद 1775 में स्वीकार किया और 11 दिन का परिवर्तन कर 3 सितम्बर को 14 सितम्बर बना दिया।
- यूरोप के कैलेंडर में 28, 29, 30 और 31 दिनों के महीने होते हैं, जो विचित्र हैं। ये न तो किसी खगोलीय गणना पर आधारित हैं और न किसी प्रकृति चक्र पर।

कैलेंडर रिफार्म कमेटी ने विक्रम संवत को राष्ट्रीय संवत बनाने की सिफारिश की। वास्तव में विक्रम संवत, ईसा संवत से 57 साल पुराना था। परंतु तत्कालीन सरकार की 'अंग्रेजी मानसिकता' के चलते उन्हे यह सिफारिश पसंद नहीं आई।

रोमन कैलेंडर तथा इसकी विसंगतियां- आज के ईसवी सन् का मूल रोमन संवत है। यह ईसा के जन्म के 753 वर्ष पूर्व रोम नगर की स्थापना से प्रारम्भ हुआ। तब इसमें 10 माह थे। (प्रथम माह मार्च से अन्तिम माह दिसम्बर तक) और वर्ष 304 दिन का होता था। बाद में रजा नूमा पिम्पोलिय्स ने दो माह (जनवरी, फरवरी) जोड़ दिए। तब से वर्ष 12 माह अर्थात् 355 दिन का हो गया। यह ग्रहों की गति से मेल नहीं खाता था, तो जुलियस सीजर ने इसे 365 दिन का करने का आदेश दे दिया। इसमें कुछ माह 30 और कुछ 31 दिन के बनाए गए और फरवरी का माह 28 दिनों का रहा जो चार वर्षों में 29 दिनों का होता है। इस प्रकार यह गणनाएं प्रारंभ से ही अवैज्ञानिक, असंगत, असंतुलित, विवादित एवं काल्पनिक रहीं।

भारतीय कालगणना प्रकृति के नियमों पर आधारित पूर्णतः वैज्ञानिक पद्धति है। इसका ज्ञान नई पीढ़ी तक पहुंचे और वे अपने दैनंदिन कार्यों में हिन्दू पंचांग का उपयोग करना सीखें तो यह 'स्व' की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। भारत सरकार को कैलेंडर रिफॅार्म कमेटी द्वारा विक्रम संवत को राष्ट्रीय संवत घोषित करने की सिफारिश अविलंब स्वीकार करनी चाहिए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ - अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा 2025 जनसेवा विद्या केंद्र, चन्नेनहल्लि, बेंगलुरु (21-23 मार्च, 2025)

बांग्लादेश के हिंदू समाज के साथ एकजुटता से खड़े रहने का आह्वान

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा, बांग्लादेश में हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों पर इस्लामी कट्टरपंथी तत्वों द्वारा लगातार हो रही सुनियोजित हिंसा, अन्याय और उत्पीड़न पर गहरी चिंता व्यक्त करती है। यह स्पष्ट रूप से मानवाधिकार हनन का गम्भीर विषय है।

बांग्लादेश में वर्तमान सत्ता पलट के समय मठ-मंदिरों, दुर्गा पूजा पंडालों और शिक्षण संस्थानों पर आक्रमण, मूर्तियों का अनादर, नृशंस हत्याएँ, संपत्ति की लूट, महिलाओं के अपहरण और अत्याचार, बलात् मतांतरण जैसी अनेक घटनाएँ लगातार सामने आ रही हैं। इन घटनाओं को केवल राजनीतिक बताकर इनके मजहबी पक्ष को नकारना सत्य से मुंह मोड़ने जैसा होगा, क्योंकि अधिकतर पीड़ित, हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों से ही हैं।

बांग्लादेश में हिंदू समाज, विशेष रूप से अनुसूचित जाति तथा जनजाति समाज का इस्लामी कट्टरपंथी तत्वों द्वारा उत्पीड़न कोई नई बात नहीं है। बांग्लादेश में हिन्दुओं की निरंतर घटती जनसंख्या (1951 में 22 प्रतिशत से वर्तमान में 7.95 प्रतिशत) दर्शाती है कि उनके सामने अस्तित्व का संकट है। विशेषकर, पिछले वर्ष की हिंसा और घृणा को जिस तरह सरकारी और संस्थागत समर्थन मिला, वह गंभीर चिंता का विषय है। साथ ही, बांग्लादेश से लगातार हो रहे भारत-विरोधी वक्तव्य दोनों देशों के सम्बन्धों को गहरी हानि पहुँचा सकते हैं ।

कुछ अंतरराष्ट्रीय शक्तियाँ जानबूझकर भारत के पड़ोसी क्षेत्रों में अविश्वास और टकराव का वातावरण बनाते हुए एक देश को दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर अस्थिरता फैलाने का प्रयास कर रही हैं। प्रतिनिधि सभा, चिंतनशील वर्गों और अंतरराष्ट्रीय मामलों से जुड़े विशेषज्ञों से अनुरोध करती है कि वे भारत विरोधी वातावरण, पाकिस्तान तथा 'डीप स्टेट' की सक्रियता पर दृष्टि रखें और इन्हें उजागर करें। प्रतिनिधि सभा इस तथ्य को रेखांकित करना चाहती है कि इस सारे क्षेत्र की एक साँझी संस्कृति, इतिहास एवं सामाजिक संबंध हैं जिसके चलते एक जगह हुई कोई भी उथल-पुथल सारे क्षेत्र में अपना प्रभाव उत्पन्न करती है। प्रतिनिधि सभा का मानना है कि सभी जागरूक लोग भारत और पड़ोसी देशों की इस साँझी विरासत को दृढ़ता देने की दिशा में प्रयास करें।

यह उल्लेखनीय है कि बांग्लादेश के हिन्दू समाज ने इन अत्याचारों का शांतिपूर्ण, संगठित और लोकतांत्रिक पद्धति से साहसपूर्वक विरोध किया है। यह भी प्रशंसनीय है कि भारत और विश्वभर के हिंदू समाज ने उन्हें नैतिक और भावनात्मक समर्थन दिया है। भारत सहित शेष विश्व के अनेक हिंदू संगठनों ने इस हिंसा के विरुद्ध आंदोलन एवं प्रदर्शन किए हैं और बांग्लादेशी हिंदुओं की सुरक्षा व सम्मान की माँग की है। इसके साथ ही विश्व भर के अनेक नेताओं ने भी इस विषय को अपने स्तर पर उठाया है ।

भारत सरकार ने बांग्लादेश के हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के साथ खड़े रहने और उनकी सुरक्षा की आवश्यकता को लेकर अपनी प्रतिबद्धता जताई है। उसने यह विषय बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के साथ-साथ कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी उठाया है। प्रतिनिधि सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि वह बांग्लादेश के हिंदू समाज की सुरक्षा, गरिमा और सहज स्थिति सुनिश्चित करने के लिए वहाँ की सरकार से निरंतर संवाद बनाए रखने के साथ साथ हर सम्भव प्रयास जारी रखे।

प्रतिनिधि सभा का मत है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों व वैश्विक समुदाय को बांग्लादेश में हिन्दू तथा अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के साथ हो रहे अमानवीय व्यवहार का गंभीरता से संज्ञान लेना चाहिए और बांग्लादेश सरकार पर इन हिंसक गतिविधियों को रोकने का दबाव बनाना चाहिए। प्रतिनिधि सभा हिन्दू समुदाय एवं अन्यान्य देशों के नेताओं से तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से आह्वान करती है कि वे बांग्लादेशी हिंदू तथा अन्य अल्पसंख्यक समाज के समर्थन में एकजुट होकर अपनी आवाज उठाएँ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : समाजाभिमुख कार्य

तेलंगाना - इंदूर नगर के श्री नीलकंठेश्वर उद्योगी शाखा ने शाखा के भौगोलिक परिसर में स्थित एक घुमन्तु समाज और वनवासी निवास करने वाली बस्ती को चयनित किया। व्यापक सर्वेक्षण किया गया और उनकी जरूरतों, समस्याओं को पहचाना गया। मुख्य रूप से ईसाईकरण तेजी से हो रहा था। बस्ती का विकास हो इसलिए अनेक समाजोपयोगी कार्य आरम्भ हुए। सीवेज सिस्टम को ठीक किया गया। मानसून के दौरान वैकल्पिक आवास, भोजन की व्यवस्था की गई। घरों में बिजली की आपूर्ति के लिए प्रयास किये गए। सम्मक्का सरलम्मा (यहाँ की स्थानीय वन देवता) के मंदिर, जो उनके आदर्श हैं, का निर्माण किया गया। इस प्रयास से उनमें हिंदू धर्म की प्रति निष्ठा बढ़ी है और घर-घर हनुमान चालीसा कार्यक्रम का आयोजन उस बस्ती में किया गया।

बस्ती में महाराजा रामुलु के साथ घर-घर धर्म ज्योति नामक कार्यक्रम में महाराज स्वयं सभी घरों में गए और हर घर में धर्म ज्योति जलाई और उन्हें भगवान की पूजा छवि और केसर से आशीर्वाद दिया। बच्चों को स्कूल भेजना प्रारम्भ हुआ । अब 90 प्रतिशत बच्चे स्कूल जा रहे हैं। शाखा वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में एक परिवार के रूप में बस्ती निवासियों ने भाग लिया ।

आंध्र प्रदेश - विशाखा विभाग, अनकापल्ली जिला के गोंडुपालेम व्यवसायी तरुण शाखा ने गाँव का श्मशान सब के लिए खुला होना चाहिए इसलिए सभी जातियों के नेता गण को एकत्रित कर अनेक बार चर्चा कर आम सहमती बनाई। सब ने मिलकर पैसा इकट्ठा करके श्मसान में शिव भगवान की एक मूर्ती स्थापित की एवं सरहद दीवार बनाई। गाँव में समरस भाव का जागरण भी हुआ। इसी प्रकार गाँव में सर्वेक्षण करके 157 जरूरत मंद लोगों की मेडिकल जांच करवाई। 78 लोगों की मोती बिंदु शल्यक्रिया करवाई। मजदूर लोगों के बच्चों को स्वयंसेवकों ने पढाना प्रारंभ किया। अब उनमें से कई बच्चे पाठशालाओं में जा रहे हैं।

मालवा - अलीराजपुर जिले के कट्ठिवाड़ा खंड में आमखुट ग्राम की बिरसा मुंडा शाखा के द्वारा मंडार गांव में अतिप्राचीन, पहाड़ के ऊपर पत्थर की गुफा में बना गोतर माता (गोद भराई) मंदिर के पुनर्जागरण का कार्य किया। इस जनजाति ग्राम में कुल 200 परिवार है। शिक्षा व अन्य सुविधाओं के अभाव में स्थानान्तरण होता है। स्वतंत्रता से पूर्व से बने चर्च से ईसाई मिशनरी दवा, शिक्षा, आदि की आड़ में धर्मांतरण कर रहे थे। शाखा द्वारा ग्राम समिति बनाकर धार्मिक आयोजन व मासिक गतिविधि आरम्भ हुई। स्वयंसेवकों ने श्रमदान, स्वच्छता अभियान एवं दीवार लेखन का कार्य किया। अब गांव के सभी लोगों में गोतरा माता रानी के प्रति सद्भावना एवं आस्था, विश्वास जागा है व घर वापसी का मार्ग खुला है।

मध्य भारत - विदिशा विभाग के सभी 29 खंडो की चिन्हित 56 व्यवसायी शाखाओं ने शाखा क्षेत्र का सामाजिक अध्ययन कर चिन्हित समस्या के समाधान हेतु सार्थक प्रयास प्रारम्भकिया है। शाखाओं की जागरण टोली ने समस्या का चयन किया एवं समाज की सज्जन शक्ति एवं विविध संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ समस्या समाधान की योजना बनाई। शाखाओं पर विभाग, ज़िला कार्यकारिणी के कार्यकर्ताओं को पालक इस नाते निश्चित किया गया। शाखाओं द्वारा नशा मुक्ति, सरकारी विद्यालय में बच्चों की कम उपस्थिति, गो-संरक्षण, नर्मदा जी का संरक्षण, सिंगल यूज प्लास्टिक पर कार्य, फलदार वृक्षों की कमी, लव जिहाद, धार्मिक जागृति का अभाव, संस्कार शिक्षण कमी, अस्वच्छता, मोबाइल गेमिंग, हिंदू परिवार पलायन इस तरह से 103 प्रकार की समस्याएं चिन्हित की गयी। समाज के सहयोग से सार्थक परिणाम भी दिखाई देने लगे है। मा. सरकार्यवाह जी के साथ अध्ययन करने वाली शाखा टोली के कार्यकर्ताओं का अनुभव कथन एवं संवाद हुआ। सभी 56 शाखाओं के 652 कार्यकर्ता उपस्थित हुए ।

महाकौशल - छतरपुर विभाग में ग्राम स्तर पर सामाजिक समरसता सर्वेक्षण सम्पन्न हुआ। सभी 270 मण्डल के 2106 ग्राम में 9 बिन्दु के सर्वेक्षण पत्रक के आधार पर कार्यकर्ताओं ने घर घर जाकर सर्वेक्षण कार्य किया। सर्वेक्षण में पाया गया कि 1936 ग्रामों में सभी जाती समाज के बंधुओं को मंदिर में प्रवेश है, 1913 ग्रामों में सभी वर्गों का एक ही श्मशान स्थल पर अंतिम संस्कार होता है एवं 1954 ग्रामों में धर्मशालाओं के उपयोग की अनुमति सभी जाति के बंधुओ के लिए है। ऐसी और भी सकारात्मक बाते ध्यान में आयी।10 प्रतिशत ग्राम में कार्य करने की आवश्यकता है यह भी ध्यान में आया । 1440 ग्राम में 11 सदस्यों की ग्राम समिति बनाई गई है। निश्चित समय पर इनकी बैठक होती है। लगातार 3 वर्षों के इन बिन्दुओं पर कार्य हो रहा है। इसलिए समरसता का प्रतिशत बढ़ा है। सभी 2106 ग्राम मे समिति बनाने का लक्ष्य लिया गया ।

चित्तौड़ - आसींद जिला, गुलाबपुरा नगर श्री राम तरुण व्यवसायी शाखा के जागरण टोली ने वर्ष भर में अनेक उपक्रम किये। इसमें समाजजनों की सहभागिता रही।' **नागरिक कर्तव्य**- विधानसभा और लोकसभा चुनाव के समय 100 प्रतिशत मतदान हो इसलिए छोटी बैठकों का आयोजन किया गया 80 प्रतिशत से ज्यादा मतदान हुआ। **सामाजिक समरसता** - श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व प्रभात फेरी शुरू की गई। एक वर्ष पूर्ण होने पर विशाल प्रभात फेरी का आयोजन किया गया और तत्पश्चात सामाजिक समरसता भोज का आयोजन था। सभी परिवारों के दो हजार से अधिक लोगों ने साथ में भोजन किया। शरद पूर्णिमा सहित दो बार परिवार मिलन का आयोजन किया जिसमें 100 से अधिक परिवारों का सहभाग रहा। **स्व भाव का जागरण** - बेरवा समाज के बाहुल्य क्षेत्र में हनुमान मंदिर निर्माण में सहयोग किया तथा बस्ती का नाम तिरुपति नगर करने के लिए कार्य में सहयोग किया । माली मोहल्ले में शिव मंदिर निर्माण में भी

कार्यकर्ताओं द्वारा सहयोग किया गया। पर्यावरण वर्षा काल में पानी निकालने में प्रशासन का सहयोग किया। मार्ग पर पानी भर जाने के दौरान पेव्हर और ईटों के द्वारा कृत्रिम रास्ता बनाया गया। संघ स्थान पर 45 पौधे लगाए गए। **सेवा उपक्रम -** इस वर्ष भीषण गर्मी को देखते हुए रेलवे स्टेशन पर प्रतिदिन सुबह यात्रियों को रेल के डिब्बे में ही पेय जल उपलब्ध कराया गया। **गो-सेवा -** नगर केंद्र पर गो-माता के उपचार के लिए श्री माधव गो-उपचार केंद्र संचालित है। सहायता हेतु अभियान चलाया जाता है। **सामाजिक सुरक्षा -** प्रहार महायज्ञ निमित्त घर-घर सशुल्क 320 दंड वितरीत किए गए। **अन्य उपक्रम -** श्री राम बस्ती का संचलन निकाला गया। संख्या 145 रही।

जयपुर - चूरू जिला के कांधराण व्यवसायी शाखा की जागरण टोली द्वारा गाँव वासियों के सहयोग से अनेक समाज उपयोगी कार्य किये गए है। सड़क के पक्के निर्माण को भी स्वयं तोड़कर मुख्य मार्ग को 40 फीट चौड़ा किया गया। ग्राम की मुख्य दीवारों पर अमृतवचन, रामायण एवं भागवत की चौपाई और श्लोक व भगवान के चित्र स्वयंसेवकों द्वारा बनाये गए। शिव सरोवर की पूर्ण साफ-सफाई करके पेड़ लगाए गए। ग्राम की होली अब एक साथ सामूहिक मनाई जाती है। 5000 फलदार पौधे लगाये गए। पुराना जर्जर विद्यालय भवन के स्थान पर 9 कक्ष का नया भवन निर्माण हुआ। सड़क में दब चुके मंदिर को लगभग एक करोड़ की लागत से पुनर्निर्मित किया गया।

हरियाणा - पानीपत जिले के आजाद उपनगर की एक शाखा ने अपने क्षेत्र की कूड़ा बीनने वालों की सेवा बस्ती (जोगी बस्ती) में संपर्क, उन घरों में जलपान, वहां के विद्यार्थियों को पढाना, संस्कार केंद्र खोलना, यहाँ आने वाले विद्यार्थियों का आधार कार्ड बनवाना, उनको सरकारी स्कूल में दाखिल करवाना, वहां श्रमिक मिलन शुरू करना प्रारम्भ किया। उस क्षेत्र के सामाजिक अध्ययन से ध्यान आया कि कूड़ा बिनने वाले जब किसी कूड़े के ढेर पर कूड़ा बिनने के लिए जाते थे तो वहां पर कुछ लोग उनसे कूड़ा बिनने के बदले में 100 रुपया लेते थे। अपने कार्यकर्ताओं द्वारा बात करने पर लोगों ने उनसे पैसा लेना बंद कर दिया है। अब उस बस्ती का नाम नालंदा नगर रख दिया है।

मेरठ - देववृन्द जिला के रामपुर नगर की व्यवसायी शाखा के द्वारा घुमंतु जाति (गडरिया लुहारों) की बस्ती में सर्वेक्षण किया। अनेक समस्याएं ध्यान में आयी। समाधान हेतु प्रयास प्रारम्भ हुए। 15 बालक बालिकाओं को विद्यालय में प्रवेश कराया। उन्हें कापी, किताब, गर्म कपड़े जूते मोजे, कम्बल वितरित किए गए। 8 व्यक्तियों का आधार कार्ड बनवाया। महाराणा प्रताप बाल संस्कार केन्द्र प्रारंभ किया है।

ब्रज - वृन्दावन जिला में बरसाना ग्राम के श्रीजी शाखा की जागरण टोली द्वारा शाखा क्षेत्र का अध्ययन किया गया। एक समस्या थी कि परिक्रमा मार्ग संकरा था। पहाड़ के रास्ते में श्रद्धालुओं को परिक्रमा में कठिनाई होती थी। 40 स्वयंसेवकों ने समाज की सज्जनशक्ति के 150 बंधुओं को साथ लेकर 12 दिन तक श्रम दान किया। परिक्रमा मार्ग को 4 फीट चौडा करवा कर यात्रा को सुगम बनाया।

काशी - काशी मध्यभाग के लाजपतनगर की विवेकानंद शाखा क्षेत्र में नशे की लत के कारण घरेलू हिंसा की शिकार कुछ महिलाओं द्वारा शाखा में सहायता के लिए संपर्क किया गया। सर्वेक्षण करने पर लगभग 20 परिवार नशे एवं घरेलु हिंसा में लिप्त पाए गए। स्वयंसेवकों द्वारा नशामुक्ति अभियान चलाया गया। काउंसलिंग कर नशा न करने हेतु समझाया गया। परिणामस्वरूप 5 परिवारों में नशा एवं घरेलू हिंसा दोनों से मुक्ती मिली। शाखा क्षेत्र में 10 वर्ष पूर्व तक एक भी पेड़ नहीं था। स्वयंसेवकों द्वारा समाज का सहयोग लेकर वृक्षारोपण तथा उनकी देखभाल की योजना बनी। पूरा क्षेत्र हरा भरा हो गया है एवं चिडियों की चहचहाहट भी सुनाई देने लगी है।

दक्षिण बिहार - पटना के राजेंद्रनगर तरुण व्यवसायी शाखा द्वारा सामाजिक अध्ययन करने पर ध्यान में आया कि सेवा बस्ती में अलग अलग एन.जी.ओ. कार्यरत है। जिनके द्वारा हिन्दू विरोधी वातावरण बनाने का कार्य होता था और धर्मांतरण भी हो रहा था। शाखा के स्वयंसेवकों ने बाल संस्कार केंद्र प्रारम्भ किया। हनुमान चालीसा, सरस्वती वन्दना इत्यादी का पठन होने लगा और धीरे धीरे बस्ती का वातावरण बदलने लगा। बस्ती में हर 15 दिन पर स्वास्थ्य शिविर लगाने से अनेक लोगों को बीमारियों से राहत मिली। सिलाई केंद्र के कारण महिलाओं को रोजगार प्राप्त हुआ। पर्व त्योहार एकत्रित मनाने से समरसता का भाव भी जगा है।

मध्य बंग - विष्णुपुर खंड के बाकादह मंडल के कामारपारा गांव के आश्रम पारा व्यवसायिक शाखा के द्वारा एक संपूर्ण वनवासी गांव का सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन संभव हुआ है। सर्वेक्षण में महिला पुरुषों में व्यसनाधीनता, कम उम्र में ही शादी कर देना, बच्चों को स्कूल न भेजना जैसी बातें ध्यान में आयी। शाखा ने एक शिशु संस्कार केंद्र प्रारंभ किया। बच्चों को विद्यालय में भेजने के लिए प्रयास किये गए। महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण भी दिया गया। पुरुषों को भी साल पत्ता बनाने का मशीन दिया गया। अभी गाँव में पाठ दान केंद्र चलाए जा रहे है। 150 विद्यार्थी 6 गांव से रोज आते हैं। आस-पास के 18 गाँव में सेवा भारती एवं ग्राम विकास के द्वारा शिशु संस्कार केंद्र चलाए जा रहा है। अब बाल विवाह बंद हुए हैं।

वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य - बीते वर्ष के अपने कार्यों के सिंहावलोकन के पश्चात् वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य की एक संक्षिप्त समीक्षा करेंगे। विगत वर्ष में अपने राष्ट्रीय जीवन में उत्साहवर्धक एवं दुःखद या अप्रिय घटनाओं का सम्मिश्रण रहा है।

समूचे राष्ट्र के लिए विशेषतः हिन्दू समाज के लिए गौरव बढ़ाने वाला आत्मविश्वास जगानेवाला प्रयागराज का महाकुंभ अविस्मरणीय रहा। इस विशेष महाकुंभ ने भारत की आध्यात्मिकता एवं सांस्कृतिक विरासत के अद्भुत दर्शन के साथ साथ अपने समाज के आंतरिक सत्त्व का भी अहसास कराया। कुंभ मेला के पावन कालावधि में करोड़ों श्रद्धालुओं ने संगम में पवित्र स्नान कर 'न भूतो..' इस प्रकार के एक इतिहास का निर्माण किया। राष्ट्र के प्रत्येक पंथ संप्रदाय के साधु-महात्मा एवं भक्तजन इस आध्यात्मिक महा मेले में श्रद्धा भक्ति से भाग

लिए। इस विशाल कुंभ की समीचीन एवं सुचारु व्यवस्था का निर्माण तथा संचालन करने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य सरकार एवं भारत के केन्द्र सरकार समूचे राष्ट्र के अभिनंदन के पात्र हैं। समाज के असंख्य व्यक्ति और संस्थाओं ने भी अपने संसाधन एवं परिश्रम लगा कर व्यवस्था में अपार सहयोग देने के लिए सामने आये जो अभिनंदनीय है।

मौनी अमावस्या के प्रमुख स्नान के दिन हुए दुर्भाग्यपूर्ण भगदड़ में श्रद्धालुओं की मृत्यु की दुर्घटना इस कुंभ का एक अत्यंत दुःखद पृष्ट रहा। अन्यथा शेष सारा कुंभ व्यवस्था, अनुशासन, स्वच्छता, सेवा और सहयोग की दृष्टि से सार्वजनिक जीवन और विशेष पर्वों के आयोजन के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ है, एक कीर्तिमान बन गया है।

कुंभ के अवसर में संघ-प्रेरित अनेक संस्था-संगठनों ने भी वहाँ सेवा, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, वैचारिक जैसे विविध प्रकार के आयोजन किए थे। उन में से अपने कार्यकर्ताओं के द्वारा किये गये दो विशेष प्रयासों का उल्लेख करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है।

1) **नेत्र कुंभ -** सक्षम संगठन ने पिछली बार जैसे इस बार भी कुंभ में आनेवाले लोगों की नि:शुल्क नेत्र परीक्षा, चश्मा वितरण और, आवश्यकता पड़ने पर शल्य क्रिया की व्यवस्था की थी इस कार्य में अनेक सेवा भावी स्वास्थ्य संस्थाओं व अन्य सामाजिक संस्थाओं ने पूर्ण सहयोग दिया। सर्व सुसज्जित विशाल पंडाल में आयोजित इस प्रकल्प की कुछ संख्यात्मक जानकारी।

नेत्र जाँच के कुल लाभार्थी 2,37,964 निशुल्क चश्मा वितरण 1,63,652 मोतियाबिंद ऑपरेशन 17,069, कुल 53 दिन चले इस सेवा कार्य के लिए 300 से अधिक नेत्र चिकित्सक और 2800 कार्यकर्ताओं ने कार्य किया।

2) **एक थाली-एक थैला अभियान-** पर्यावरण गतिविधि की योजना और समाज के अनेक संगठन संस्थाओं के सहभागिता से आयोजित एक थाली एक थैला अभियान अत्यंत सफल रहा कुंभ में थर्मोकोल थाली या पॉलीथिन थैले का उपयोग नहीं करने के संकल्प को साकार करने के उद्देश्य से चले इस अभियान के द्वारा देश भर में स्टील थालियाँ और कपड़े की थैलियों का व्यापक संग्रह किया गया। इसमें कुल 2241 संस्था-संगठनों ने 7258 केंद्रों से कुल 14,17,064 थालियाँ तथा 13,46,128 थैले का संग्रह किया। जिनको कुंभ में विविध पंडालों में वितरित किया गया। यह अभियान अपने आप में एक अनोखा प्रयोग था इस कारण पर्यावरण जागृति लाने में और स्वच्छ कुंभ की कल्पना को जन जन तक पहुँचाने में उत्साहवर्धक सफलता मिली।

इस वर्ष हुई लोकसभा तथा चार राज्यों की विधान सभा चुनाव के पूर्व स्वयंसेवकों ने लोकमत परिष्कार के व्यापक प्रयास करते हुए राष्ट्र हित के मुद्दों को समाज में चर्चा में लाये और अधिकाधिक प्रमाण में मतदान होने के लिए प्रयत्न किया यह उपक्रम स्वस्थ लोकतंत्र की सुदृढ़ता को दर्शाते हुए जनता को अपने राष्ट्रीय कर्तव्य को निभाने में उपयुक्त सिद्ध हुआ।

आदर्श प्रशासन, धार्मिक श्रद्धा, प्रजा के प्रति मातृत्व, निष्कलंक चरित्र्य जैसे गुणों की प्रतिमूर्ति स्वनामधन्य लोकमाता अहिल्या देवी होलकर के जन्म की त्रिशताब्दी पर संघ की ओर से वक्तव्य दिया गया था उसके प्रकाश में देश के अनेक स्थानों पर प्रभावी कार्यक्रम संपन्न हुए। कई सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं ने विविध प्रकार के आयोजन द्वारा लोकमाता के प्रेरक व्यक्तित्व को समाज के सम्मुख लाने का सफल प्रयास किए अपने इतिहास के एक प्रखर व्यक्तित्व के स्मरण से समाज में प्रेरणा एवं कर्तव्य की जागृति हुई।

ऐसे विविध प्रेरणादायी और उत्साहजनक गतिविधियों के कारण समाज में राष्ट्र भाव, सामाजिक संवेदना, विकास के विभिन्न प्रयास के सकारात्मक परिवेश उत्तरोत्तर निर्माण हो रहा है किंतु साथ ही साथ कुछ गंभीर समस्या एवं चुनौतियों को भी अपने समाज को सामना करना पड़ रहा है।

अपने पड़ोसी बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के राजनैतिक आंदोलन के दौरान मज़हबी कट्टरपंथियों द्वारा वहाँ के हिन्दू समाज एवं अन्य अल्पसंख्यकों पर हुए बर्बरतापूर्ण आक्रमण घोर निंदनीय है मानवता, लोकतंत्र जैसे सभ्य समाज के किसी भी मापदंड से वहाँ की घटनाएँ शर्मनाक रही हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक और अन्य कई संगठनों के संयुक्त प्रयास से देश भर में अनेक स्थानों पर बांग्लादेश की स्थिति के कारणीभूत उन्माद शक्तियों का खंडन करने के कार्यक्रम हुए। भारत की सरकार ने भी हिंदुओं की रक्षा के लिए बांग्लादेश सरकार से आग्रह किया और इस दिशा में वैश्विक अभिमत बनाने का प्रयास किया।

वहाँ की स्थिति अभी भी गंभीर है। हिन्दुओं के जानमाल की रक्षा संकट में हैं, किंतु उल्लेखनीय विषय है कि इस विकट और भीषण परिस्थिति में भी बांग्लादेश का हिन्दू समाज आत्म धैर्य से स्वयं के बलबूते पर आक्रमणकारी शक्तियों के सामने डट कर खड़ा हैं और अपनी रक्षा करने के लिए संघर्षरत हैं, जो अत्यंत सराहनीय है।

भारत का समाज वहाँ के अपने हिन्दुओं की सुरक्षा एवं सुखी जीवन की ना केवल कामना करता है बल्कि उसके लिए हर संभव समर्थन व सहयोग देने का प्रयास करेगा। हमारा मत है कि जागतिक समुदाय को भी बांग्लादेश के हिंदू व अन्य अल्पसंख्यक समुदाय के मानवाधिकार की रक्षा हेतु सामने आना चाहिए।

अपने देश की पूर्व सीमावर्ती राज्य मणिपुर में विगत 20 महीनों से परिस्थिति अशांत रही है। वहाँ के दो समुदायों के बीच व्यापक प्रमाण में हुई हिंसा के वारदातों के कारण परस्पर अविश्वास व वैमनस्य उत्पन्न हो गया है। जनता को प्रतिदिन की ज़िंदगी के कई मामलों में अनेक प्रकार के कष्ट भुगतने पड़े है। पिछले दिनों केंद्र सरकार ने राजनैतिक और प्रशासनिक स्तर पर लिये कुछ निर्णयों के कारण परिस्थिति के सुधार की दिशा में कुछ आशा जगी है किंतु सौहार्दपूर्ण सहज विश्वास का माहौल आने में समय लगेगा।

इस पूरी अवधी में संघ व संघ प्रेरित सामाजिक संगठनों ने एक ओर हिंसक घटनाओं से प्रभावित लोगों की राहत के लिए कार्य किया; वहीं दूसरी ओर विविध समुदायों से निरंतर संपर्क रखा।

पृथ्वी दिवस
खुद को बचाने का दिवस

अनिल जोशी
सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद

> **आज भारत वैकल्पिक ऊर्जा के क्षेत्र में दुनिया में तीसरे स्थान पर है और कई देशों को पीछे छोड़ चुका है। 2009 में भारत की प्रति व्यक्ति बिजली खपत 1696 किलोवाट थी, जिसमें शहरी क्षेत्र में 288 किलोवाट और ग्रामीण क्षेत्रों में 96 किलोवाट खपत थी। वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में यह खपत 1826 किलोवाट प्रतिदिन हो चुकी है। यदि यह रुझान जारी रहा, तो भविष्य में भारत दुनिया के सबसे बड़े ऊर्जा उपभोक्ताओं में शामिल हो जाएगा।**

इस बार पृथ्वी दिवस की थीम रिन्यूएबल एनर्जी के ऊपर रखी गई है। और यह बात बिल्कुल सच भी है कि अगर दुनिया में कहीं बड़े बदलाव आए हैं तो उसका बहुत बड़ा कारण यही है कि हमने ऊर्जा का दुरुपयोग किया है। ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत अब तक कोयला ही रहा है और इसके कारण कार्बन डाइ-ऑक्साइड का स्तर उस स्थिति तक पहुंच चुका है कि पृथ्वी पर इसके भयावह प्रभाव दिखने लगे हैं।

उदाहरण के लिए, 2023 में कुल कार्बन डाइ-ऑक्साइड उत्सर्जन 34.45 गीगाटन था, जो 2024 तक बढ़कर 37.14 गीगाटन हो गया। कार्बन डाइ-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ने का सबसे बड़ा कारण यही है कि या तो हम ऊर्जा का बहुत अधिक दुरुपयोग कर रहे हैं या हमारी आवश्यकताएं उस स्तर तक पहुंच गई हैं कि पृथ्वी प्रभावित होने लगी है। अब इसका एकमात्र समाधान वैकल्पिक ऊर्जा के रूप में देखा जा रहा है- ऐसे स्रोतों की तलाश की जा रही है जिनसे कार्बन उत्सर्जन न हो और जो सात्विक ऊर्जा के रूप में पहचाने जाएं।

इसमें सौर ऊर्जा (सोलर एनर्जी), जल विद्युत ऊर्जा (हाइड्रो पावर) और पवन ऊर्जा (विंड एनर्जी) की बहुत बड़ी भूमिका है। यह सभी ऊर्जा के बेहतर विकल्प के रूप में उभर रहे हैं। यही कारण है कि पूरी दुनिया अब इस दिशा में कार्य कर रही है कि कैसे वैकल्पिक ऊर्जा पर निर्भरता को लगातार बढ़ाया जाए।

यदि मोटे तौर पर देखा जाए तो भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता है। वर्तमान में भारत यह लक्ष्य बना चुका है कि 2030 तक वह अपने स्वयं के संसाधनों से 500 गीगावाट तक ऊर्जा का उत्पादन करेगा। यह भी सच है कि वर्तमान में हमारी कुल बिजली उत्पादन क्षमता का 43 प्रतिशत हिस्सा सौर ऊर्जा से आ रहा है, जो एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

भारत के सामने 2030 तक वैकल्पिक स्रोतों से 500 गीगावाट ऊर्जा प्राप्त करने का लक्ष्य है, जो हमारी कुल ऊर्जा जरूरतों का 50 प्रतिशत होगा। यदि यह संभव हो जाता है, तो यह देश के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

इसी तरह, सोलर मिशन 2022 के अंतर्गत इंटरनेशनल सोलर अलायंस की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी, जिसका अपना एक विशेष महत्व है। देश की सौर ऊर्जा के उपयोग में तेजी आई है और इस पर हमारी निर्भरता भी लगातार बढ़ रही है।

अगर अन्य स्रोतों की बात करें तो, वर्तमान में हमारे पास जल विद्युत ऊर्जा का योगदान 12.35 प्रतिशत है, और बायो एनर्जी

का लक्ष्य 15 मीट्रिक टन रखा गया है। साथ ही, पेट्रोल में 20 प्रतिशत इथेनॉल मिश्रण का भी लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिससे कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी और पृथ्वी को बचाने में मदद मिलेगी।

वर्तमान में वैकल्पिक ऊर्जा के क्षेत्र में सबसे आगे चीन है। उसका कुल 500 गीगावाट उत्पादन केवल सौर ऊर्जा से है और उसकी वैकल्पिक ऊर्जा कुल ऊर्जा उत्पादन का 50 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है। इसके अलावा, चीन न्यूक्लियर पावर स्टेशनों की संख्या भी बढ़ाने की योजना बना रहा है, जो जल्द ही 55 प्रतिशत तक पहुंच जाएगी।

दुनियाभर में अब यह माना जाने लगा है कि 2030 तक कुल ऊर्जा उत्पादन का 60 प्रतिशत हिस्सा वैकल्पिक ऊर्जा से आना चाहिए। 2024 में यह निर्भरता केवल 13 प्रतिशत थी, जो 2030 तक 20 प्रतिशत होने की संभावना है। यदि यह लक्ष्य पूरा होता है, तो यह ऊर्जा संकट से निपटने में महत्वपूर्ण योगदान होगा।

वर्तमान में बिजली उत्पादन में कोयले का सबसे बड़ा योगदान है। आने वाले समय में सौर और पवन ऊर्जा पर निर्भरता बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है, जिसका लक्ष्य इसे 75 प्रतिशत तक पहुंचाना है।

आज दुनिया में सबसे अधिक ऊर्जा गर्मी उत्पन्न करने (हीटिंग) के लिए उपयोग की जाती है और इसकी कुल खपत का 50 प्रतिशत अकेले इस क्षेत्र में खर्च होता है। यह कार्बन डाइ-ऑक्साइड उत्सर्जन का सबसे बड़ा कारण भी बन रहा है।

अब सवाल यह उठता है कि जहां एक ओर इतने प्रयास किए जा रहे हैं, वहीं आवश्यकता इस बात की भी है कि हम व्यक्तिगत स्तर पर ऊर्जा की खपत को नियंत्रित करें। भारत की सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता 5000 किलोवाट है और यह 4 से 10 किलोवाट प्रति वर्ग मीटर तक उपलब्ध है।

सरकार ने विभिन्न योजनाओं और सब्सिडी के माध्यम से हर घर को सौर ऊर्जा अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। यह हमारा दायित्व है कि हम अधिक से अधिक सौर ऊर्जा का उपयोग करें और सरकार की इस पहल में सहयोग करें।

आज भारत वैकल्पिक ऊर्जा के क्षेत्र में दुनिया में तीसरे स्थान पर है और कई देशों को पीछे छोड़ चुका है। 2009 में भारत की प्रति व्यक्ति बिजली खपत 1696 किलोवाट थी, जिसमें शहरी क्षेत्र में 288 किलोवाट और ग्रामीण क्षेत्रों में 96 किलोवाट खपत थी। वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में यह खपत 1826 किलोवाट प्रतिदिन हो चुकी है। यदि यह रुझान जारी रहा, तो भविष्य में भारत दुनिया के सबसे बड़े ऊर्जा उपभोक्ताओं में शामिल हो जाएगा।

भारत का लक्ष्य है कि 2047 तक कुल ऊर्जा उत्पादन का 9 प्रतिशत परमाणु ऊर्जा (एटॉमिक पावर) से प्राप्त हो और 2030 तक 5,00,000 मेगावाट ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। हालांकि, इस क्षेत्र में हाल के वर्षों में कुछ बढ़ोतरी हुई है, लेकिन इसे और तेजी से बढ़ाने की आवश्यकता है।

आज दुनिया में सबसे अधिक ऊर्जा गर्मी उत्पन्न करने (हीटिंग) के लिए उपयोग की जाती है और इसकी कुल खपत का 50 प्रतिशत अकेले इस क्षेत्र में खर्च होता है। यह कार्बन डाइ-ऑक्साइड उत्सर्जन का सबसे बड़ा कारण भी बन रहा है।

यदि हम पृथ्वी को संरक्षित और सुरक्षित रखना चाहते हैं, तो हमें ऐसे सभी विकल्पों पर विचार करना होगा जो हमारी ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करें। इसके साथ ही हमें व्यक्तिगत स्तर पर ऊर्जा की खपत को सीमित करने के उपाय भी अपनाने होंगे।

पृथ्वी लगातार हमें संकेत दे रही है। हर साल बढ़ती गर्मी इसी का प्रमाण है कि हमने अब तक ऊर्जा खपत की कोई सीमा तय नहीं की है। यह भी आवश्यक है कि गांवों और शहरों के बीच ऊर्जा खपत का संतुलन स्थापित किया जाए।

पृथ्वी के पास संसाधनों की कोई कमी नहीं है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि हम असीमित ऊर्जा का उपयोग करें। अब समय आ गया है कि हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित करें ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी को सुरक्षित रखा जा सके।

सत्य यही है कि ये कदम केवल पृथ्वी और प्रकृति को बचाने के लिए नहीं, बल्कि मानवता को विनाश से बचाने के लिए भी आवश्यक हैं। क्योंकि यदि हमने ऊर्जा संतुलन बनाए रखने में असफलता पाई, तो पृथ्वी को इसका भारी मूल्य चुकाना पड़ेगा। ■

बिन पानी सब सून

प्रो. बलवंत सिंह राजपूत
पूर्व कुलपति, हे.न.ब. गढ़वाल विवि.
एवं अध्यक्ष उ. प्र. राज्य उच्च शिक्षा परिषद्

जल प्रदूषण की वर्तमान स्थिति देखकर भारत के पूर्व प्रधान मंत्री स्व. श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी की बात का स्मरण हो रहा है कि अगर तृतीय विश्व महायुद्ध हुआ तो वो पीने योग्य जल के आधिपत्य के लिए होगा। जितनी तेजी से और अंधाधुंध गति से प्राकृतिक जलस्रोतों का दोहन ही नहीं बल्कि शोषण हो रहा है उसके परिणाम स्वरूप निरंतर सूखते प्राकृतिक झरने, ताल, नदियां, नलकूप तथा कुओं को देख कर उतनी ही शीघ्र अटल जी की इस बात में वर्णित जलाभाव का भय बढ़ता जा रहा है। भूमिगत जल का स्तर भी निरंतर गिरता जा रहा है। मुझे याद है कि मेरे दादा जी नदी, झरनों और कुओं का शुद्ध जल पिया करते थे, मेरे पिता कुंए और हैंड पंप का शुद्ध पानी पीते थे और हम टैप के पानी को आर ओ द्वारा साफ करके अथवा बोतल के तथाकथित मिनरल वाटर को पीते है। यदि शुद्ध पीने योग्य पानी की उपलब्धता इसी गति से घटती रही तो हमारी अगली पीढ़ियां एक एक चम्मच पीने योग्य शुद्ध जल के लिए संघर्ष करती दिखाई पड़ेंगी। इस जल संकट से बचने के लिए हमे जल संरक्षण और जल स्रोतों की पवित्रता बनाए रखने की अपनी प्राचीन वैदिक परंपराओं को पुनः स्वीकारना और अपनाना होगा।

वेदों में स्पष्ट निर्देश हैं कि अन्न एवं जल को प्रदूषण से मुक्त रखा जाए। इन वैदिक निर्देशों में प्रकृति एवं मानव के मध्य सामंजस्य एवं सादर संतुलन समाहित है। प्रकृति के प्रति प्रेम एवम श्रद्धा की ये परंपराएं वैदिक युग में प्रारंभ हुई तथा भारत में मानव सभ्यता के विकास में शीर्ष पर पहुंची। इसके परिणाम स्वरूप यज्ञ, प्रकृति प्रेम, जलस्रोतों के प्रति श्रद्धा एवं पारस्परिक सहिष्णुता तथा समायोजन की परंपराओं के माध्यम से पर्यावरण एवं समाज के मध्य स्थाई सह अस्तित्व एवं स्थाई संतुलन का प्रदूभाव हुआ। इसके कारण आध्यात्मिक साधना एवम बौद्धिक सुग्रहिता के धागे इतनी सहजता से बुने गए कि मानव की सांसारिक स्थूल आवश्यकताएं बहुत समित रखी गई जिनकी पूर्ति प्रकृति द्वारा सहजता से की जाने लगी थी।

सभी वैदिक शिक्षाओं में जल, वायु, मृदा, ऊर्जा तथा आकाश (सभी पंचभूत), मस्तिष्क, विचार, स्मृति, बुद्धि, एवं चेतना (सभी पांच सूक्ष्म तत्व) तथा सभी पांच तनमत्राओं (रूप, गंध, रस, स्पर्श एवं शब्द) को सभी प्रकार के

प्रदूषण से मुक्त रखने निर्देश दिए गए हैं।

वैदिक परंपराओं में जल को जीवन द्रव मानकर देव (वरुण देव) के रूप में पूजा जाता है। कई वैदिक ऋचाओं में जल को शुद्ध, संरक्षित एवं प्रदूषण रहित रखने के निर्देश दिए गए हैं। विभिन्न नदियों की पूजा करने की भी वैदिक परंपरा रही है–

गंगे। च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेस्मिन सन्निंधी कुरु।।

वर्षा के जल के सुरक्षित संचय और भूमिगत जल के संरक्षण की वैदिक परंपरा रही हैं। वेदों में जलस्रोतों के रूप में कूप, झरनों तथा तालाबों के निर्माण की वैदिक परंपरा रही है एवं किसी भी जलस्रोत को दूषित करने के कृत्य को महापाप घोषित किया गया है। सभी नदियों में भगीरथी गंगा को बहुत पवित्र एवं श्रद्धा का केंद्र माना गया है तथा इसके जल को भौतिक, मानसिक एवं आत्मिक शुद्धि का कारक माना गया है।

वेदों में जल संरक्षण हेतु नदी तंत्र प्रबंधन, झरना प्रबंधन, ताल तंत्र प्रबंधन, भूमिगत जल प्रबंधन पर बहुत बल दिया गया है।

इन वैदिक परंपराओं का पालन करने से हम भविष्य के शुद्ध जल के अभाव संकट का सामना कर सकते हैं। इसलिए हमें निम्लिखित कार्य अविलंब रूप से प्रारंभ करने होंगे–

1) समस्त शुद्ध जलस्रोतों के प्रति श्रद्धा का भाव विकसित करना होगा।

2) नदियों के प्रति भक्ति का भाव रखते हुए उनमें सतत् शुद्ध जल प्रवाह बनाए रखकर कुशलता से नदी तंत्र प्रबंधन करना होगा।

3) सूख गए जलस्रोतों को पुनः जल प्रवाहयुक्त बनाकर जाग्रत करके इनका प्रबंधन करना होगा।

4) प्राकृतिक खनिज युक्त स्वास्थ्य वर्धक जलस्रोतों को हर प्रकार के प्रदूषण से मुक्त रखते हुवे संरक्षित रखना होगा।

5) भूगर्भीय जल का अंधाधुंध दोहन रोकना होगा।

6) वर्षा जल को सुरक्षित ढंग से संचित करना होगा तथा शेष वर्षा जल को भूमि के अंदर संचित करना होगा जिस से भूमिगत जल का उच्च स्तर बना रहे।

7) ड्रेनेज तंत्र तथा जल रिसाइकिल तंत्र को मजबूत करना होगा।

8) समुद्रीय जल को शुद्ध करके पीने योग्य बनाने की प्रक्रिया विकसित करनी होगी।

9) जल स्रोतों एवं जल क्षेत्रों का कुशल प्रबंधन करना होगा।

इन कार्यों में शासन, प्रशासन, वेज्ञानिकों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ जन साधारण का भरपूर सहयोग भी आवश्यक होगा। ■

अमेरिका में भारतीय मूल के खिलते फूल

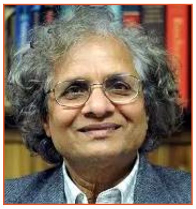

डॉ. बलराम सिंह
इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड साइंसेज
डार्टमाउथ, मेसाचुसेट्स, यूएसए

भारतीय-अमेरिकी समुदाय अमेरिका की संस्कृति को समृद्ध करता है। योग, आयुर्वेद और भारतीय त्यौहारों जैसे भारतीय संस्कृति के तत्वों को अमेरिका में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। भारतीय-अमेरिकी समुदाय विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता है और शिक्षा प्रणाली में भी महत्वपूर्ण योगदान करता है।

जब से मनुष्य जाति का इस धरा पर अवतरण हुआ है, जो कि अफ्रीका में मूल रूप से वैज्ञानिक विचार के अनुसार माना जाता है तभी से मनुष्य जाति का धरती भ्रमण चला आ रहा है। नेशनल ज्योग्राफिक मैगजीन के अनुसार डीएनए विश्लेषण के आधार पर माना जाता है कि अफ्रीका से मानव भारत में करीब 65 हजार वर्ष पूर्व आए। जिसका कारण आइस एज आधारित ठंडे मौसम की जटिलता माना गया है। करीब आज के हजार वर्ष पूर्व भारत से पहला देशांतर गमन अरब देश की तरफ हुआ था। भारत से दूसरा देशांतर गमन 45 हजार वर्ष पूर्व चीन की तरफ हुआ था और अंत में 40 हजार वर्ष पूर्व लोग भारत एवं अरब देश से यूरोप स्थान पर पहुंचे। अर्थात् भारत से बाहर जाने की प्रथा बड़ी प्राचीन रही है। आधुनिक काल में भी भारतीय मूल के लोग सारी दुनियां में पहुंच चुके हैं।

प्रवासी भारतीयों की संख्या करीब 3.5 करोड़ पहुंच चुकी है। भारतीय प्रवासी समुदाय को दुनिया का सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय माना जाता है। यहां पर कुछ प्रमुख देशों में भारतीय प्रवासियों की संख्या देखी जा सकती है, संयुक्त राज्य अमेरिका- 54 लाख; संयुक्त अरब अमीरात- 36 लाख; मलेशिया- 29 लाख; कनाडा- 28 लाख; सऊदी अरब- 24 लाख; म्यनमार- 20 लाख; यूनाइटेड किंगडम- 18 लाख और दक्षिण अफ्रीका- 17 लाख।

अमेरिका में भारतीय मूल के लोगों की संख्या 54 लाख (5.4 मिलियन) है जो अमेरिका की कुल आबादी का 1.5 प्रतिशत है। वे अमेरिका की अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं, विशेष रूप से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्रों में।

अर्थव्यवस्था : भारतीय-अमेरिकी समुदाय अमेरिका की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करता है। वे उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं और विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अमेरिका में कई सफल भारतीय-अमेरिकी उद्यमी और व्यवसायी हैं। अमेरिकी भारतीय परिवारों की आय एक औसत अमेरिकी परिवार की लगभग दोगुनी है। भारतीय-अमेरिकी समुदाय के सदस्य अमेरिका के कई प्रमुख व्यवसायों में काम करते हैं। भारतीय-अमेरिकी समुदाय अमेरिका की राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, कमला हैरिस अमेरिका की पहली महिला उपराष्ट्रपति हैं, जो भारतीय मूल की हैं। भारतीय-अमेरिकी समुदाय के सदस्य विभिन्न राजनीतिक पदों पर भी काम करते हैं।

भारतीय-अमेरिकी समुदाय अमेरिका की संस्कृति को समृद्ध करता है। योग, आयुर्वेद और भारतीय त्यौहारों जैसे भारतीय संस्कृति के तत्वों को अमेरिका में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। भारतीय-अमेरिकी समुदाय विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता है और शिक्षा प्रणाली में भी महत्वपूर्ण योगदान करता है। वे अमेरिका के शीर्ष विश्वविद्यालयों में अध्ययन करते हैं और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

भारतीय-अमेरिकी समुदाय अमेरिका में विभिन्न सामाजिक और सामुदायिक संगठनों में भी सक्रिय रूप से भाग लेता है। वे दान और सामाजिक कार्यों में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यह समुदाय अमेरिका को एक बेहतर जगह बनाने में मदद करता है। निष्कर्ष के रूप में देखा जाए तो भारतीय-अमेरिकी समुदाय अमेरिका के लिए एक महत्वपूर्ण संपत्ति है। वे अमेरिका की

अर्थव्यवस्था, राजनीति, संस्कृति और शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।

भारतीय मूल के कई सफल सीईओ हैं जो बड़ी अमेरिकी कंपनियों का नेतृत्व कर रहे हैं, यहां कुछ प्रमुख भारतीय मूल के सीईओ और उनकी कंपनियां दी गई हैं-

सुंदर पिचाई : गूगल और अल्फाबेट के सीईओ, सत्या नाडेला- माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ, शांतनु नारायण - एडोबी के सीईओ, अरविन्द कृष्णा - आईबीएम के सीईओ, नील मोहन- यूट्यूब के सीईओ, यामिनी रंगन- (SAP, Lucent, Workday, Dropbox जैसी कंपनियों में काम किया है)

इन सब गतिविधियों से एक बात उभर कर सामने आई है कि लगभग साढ़े तीन करोड़ भारतीय प्रवासियों का एक तरफ भारत से मानसिक जुड़ाव बढ़ने लगा और दूसरी तरफ तकनीकी स्थान्तरण और आर्थिक विनिमय के रास्ते खुल गए। इस आदान प्रदान में अभी भी कमी महसूस की जा रही है और वह है मतान्तर और निर्णय लेने की क्षमता। भारतीय प्रवासी (इंटलेक्युचल इनपुट एण्ड सॉफ्ट पावर) भारत को सॉफ्ट पावर देने और बौद्धिक पोषण करने में हिचकिचा रहे है। फिर भी एन.आर.आई. के दृष्टिकोण से देखें तो भारतीयों को प्रसिद्धि दिलाने में कई लोगों का योगदान रहा है। अग्रणी NRI/PIO नोबल पुरस्कार पाने वालों के नाम लें, तो साहित्य में सर विद्याधर नायपॉल, अर्थशास्त्र में प्रो. अमर्त्य सेन, रसायन शास्त्र में डॉ. वेन्की रामकृष्णन, फिजियोलॉजी एवं मेडिसिन में प्रो. हरगोविंद खुराना, भौतिकी (फिजिक्स) में डॉ. सुब्रमनियम चन्द्रशेखर आदि के नाम उभर कर सामने आते है। उसी प्रकार स्वामी विवेकानंद, इस्कॉन संस्थापक श्रील प्रभुपाद, महर्षि महेश योगी, परमहंस योगानंद जैसी अनेक विभूतियों ने अमेरिकी समाज को भारतीय आध्यात्मिक चेतना से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। पिछले कुछ वर्षों में डॉ. दीपक चोपड़ा ने भी जीवन कला विचारक के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। सन् 2015 से 2017 तक प्रो. वी अरविंद पनागरिया (उप सभापति नीति आयोग) कोलंबिया विश्वविद्यालय, अमेरिका के तथा 2013–2016 की अवधी में शिकागों विश्वविद्यालय के रघुराम राजन जो रिजर्व बैंक के गवर्नर के पद पर रहे हैं अपने क्षेत्र में, प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते है। जिन्होनें भारत की उन्नति में योगदान दिया है।

अमेरिका में रहने वाले अनेक प्रवासी भारतीय राजनीति और व्यापार के क्षेत्र में उच्च पदों तक पहुंचे हैं, इसके अलावा चिकित्सा सेवा, विश्वविद्यालय शिक्षण और कंप्यूटर इंजीनियरिंग में भी ये बड़ी संख्या में शामिल हैं। उदाहरण के लिए, होटल और मोटल व्यवसाय में भारतीय मूल के अमेरिकी संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 68 प्रतिशत का बड़ा हिस्सा रखते हैं। एक स्वतंत्र उद्योग में इस तरह का स्वामित्व उन्हें आत्मनिर्भरता और संचालन की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

अभी हाल में हुए अमेरिका के चुनाव में भारतीय मूल के व्यक्ति रिपब्लिकन एवं डेमोक्रेटिक दोनों पार्टियों में नेता के रूप में उभरे। रिपब्लिकन पार्टी से वी. रामास्वामी ने एक प्रत्याशी के रूप अपनी शक्ति का जोरदार प्रदर्शन किया और अब Department of Government Efficiency (DoGE) का ट्रम्प के शासन में नेतृत्व करने को मिला। दूसरी तरफ कमला हैरिस डेमोक्रेटिक पार्टी की प्रेसिडेंशियल कैंडिडेट के रूप में उभरीं। पराजय के बावजूद उन्होंने भारतीय मूल के लोगों का प्रतिनिधित्व किया। इसी तरह भारतीय मूल के कैश पटेल Director of Federal Bureau of Investigation (FBI) के प्रतिष्ठित पद पर हैं और तुलसी गैबर्ड जो कि भारतीय मूल की तो नहीं हैं किन्तु भारतीय संस्कृति से प्रभावित हरे कृष्ण परिवार की ऐसी बेटी हैं जो हिन्दू धर्म के अनुसार जीवनयापन करती हैं। इन्होंने कैश पटेल की तरह भगवद्गीता पर हाथ रखकर शपथ ली थी और डायरेक्टर ऑफ नेशनल इंटेलिजेंस के पद को सम्भाले हुए हैं।

अमेरिका में रहने वाले अनेक प्रवासी भारतीय राजनीति और व्यापार के क्षेत्र में उच्च पदों तक पहुंचे हैं, इसके अलावा चिकित्सा सेवा, विश्वविद्यालय शिक्षण और कंप्यूटर इंजीनियरिंग में भी ये बड़ी संख्या में शामिल हैं।

इस मामले में मैं अपने अनुभव को विनम्रता से प्रस्तुत करने की कोशिश करता हूँ। मैंने देखा है कि शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय मूल के लोग बहुत आगे हैं। इसका प्रभाव उनके आर्थिक एवं सामाजिक (अमेरिका में सबसे कम अपराधिक मामले भारतीय मूल के लोगों के होते हैं) स्तर पर तो है ही, भारतीय मूल के लोग शिक्षा क्षेत्र में नेतृत्व पदों पर, विशेष रूप से उच्च शिक्षा संस्थानों में नियुक्त हैं। इसके अलावा भारतीय मूल के लोगों ने, विशेष रूप से जैन समाज ने, अमेरिका के 14 विश्विद्यालयों में नामित प्रोफेसर पद (Named Professorship) की स्थापना की है। इसी तरह से सिख समाज ने भी कम से कम दो ऐसे पद नियुक्त करवाये हैं। एक बात और अनुभव में आयी है कि अनेक विश्वविद्यालय भारतीय विषयों का इण्डियन स्टडीज, साउथ एशियन स्टडीज अथवा एशियन स्टडीज के नाम पर अध्ययन करते हैं, परन्तु प्रायः इनमें भारतीयता कम और भारतीय समाज की बुराइयां अधिक दर्शायी जाती रही हैं।

इस क्षेत्र में हम लोगों ने जिसमें 'मेसाचुसेट्स यूनिवर्सिटी डार्टमाउथ' के कई प्रोफेसर शामिल थे, एक सेंटर फॉर इंडिक स्टडीज का विश्व में पहला स्थापन किया। वहां पर ऐकडेमिक विषय भारतीयता के आधार पर पढ़ाये जाते रहे हैं। यहां तक कि औपचारिक रूप से योग भी एक विज्ञान के रूप में पढ़ाया जाता है।

निःसंदेह अमेरिकी भारतीय भारत की संस्कृति और भारतीय स्वाभिमान को पूरी दुनिया तक विस्तृत करते हुए मातृभूमि से दूर रहते हुए भी माँ भारती की सेवा की एक अनुपम मिसाल प्रस्तुत कर रहे हैं।

संघ से मिले संस्कार और जीवन के उद्देश्य

अमेरिका के प्रसिद्ध शोध वैज्ञानिक एवं पॉडकास्टर-लेग्स फ्रीडमैन द्वारा लिया गया प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का साक्षात्कार 16 मार्च 2025 को प्रसारित हुआ। साक्षात्कार में फ्रीडमैन ने प्रधानमंत्री के बचपन, हिमालय में बिताए गए वर्ष तथा सार्वजनिक जीवन से संबंधित अनेकों प्रश्न पूछे। यहां प्रस्तुत हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंधित प्रश्नोत्तर -

लेग्स फ्रीडमैन : आपके जीवन का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि आपने जीवन भर अपने देश भारत को सबसे ऊपर रखने की बात कही है। जब आप 8 साल के थे तब आप आरएसएस में शामिल हुए जो हिंदू राष्ट्रवाद के विचार का समर्थन करता है। क्या आप आरएसएस के बारे में बता सकते हैं? और उनका आप पर क्या प्रभाव पड़ा? आप जो भी आज हैं और आपके राजनीतिक विचारों के विकास पर उनका क्या प्रभाव पड़ा?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी : देखिये, एक तो बचपन में कुछ न कुछ करते रहना ये मेरा स्वभाव था। मुझे याद है मेरे यहां एक माकोसी थे, मुझे नाम थोड़ा याद नहीं, वो शायद सेवा दल में हुआ करते थे। माकोसी सोनी ऐसे कुछ थे। वह अपने पास एक बजाने वाली डफली रखते थे और देशभक्ति के गीत गाते थे, उनकी आवाज भी बहुत अच्छी थी। वह हमारे गांव में आते थे, अलग-अलग जगह पर उनके कार्यक्रम होते थे। मैं पागल की तरह बस उनको सुनने चला जाता था। रात-रात भर उनके देशभक्ति के गाने सुनता था। मुझे मजा आता था, क्यों आता था, पता नहीं है।

वैसे ही, मेरे यहां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा चलती थी। शाखा में तो खेल-कूद होता है, लेकिन देशभक्ति के गीत भी होते थे। तो मन को बड़ा मजा आता था, यह सब मन को छूता था, अच्छा लगता था। तो ऐसे करके हम संघ में आ गए। संघ से संस्कार मिले कि भई कुछ भी सोचो, करो, अगर वो पढ़ते हो, तो भी सोचो, मैं इतना पढ़ूं, इतना पढ़ूं कि मैं देश के काम आऊं। अगर व्यायाम करता हूं तो ऐसा व्यायाम करूं, ऐसा व्यायाम करूं कि मेरा शरीर भी देश के काम आए। यह संघ के लोग सिखाते रहते हैं।

अब संघ एक बहुत बड़ा संगठन है। शायद अब उसके सौ साल हो रहे हैं, ये सौवां वर्ष है और दुनिया में कहीं इतना बड़ा स्वयंसेवी संगठन होगा, ऐसा मैंने तो नहीं सुना है। करोड़ों लोग उसके साथ जुड़े हुए हैं। लेकिन संघ को समझना इतना सरल नहीं है। संघ के काम को समझने का प्रयास करना चाहिए और संघ, एक तो 'पर्पज ऑफ लाइफ' (जीवन के उद्देश्य) के विषय में आपको एक अच्छी दिशा देता है। दूसरा यह कि जो वेद काल से जो कहा गया है, देश ही सब कुछ है और जनसेवा ही प्रभुसेवा है, जो हमारे ऋषियों ने कहा है, जो विवेकानंद ने कहा, वही बातें संघ के लोग करते हैं। वो एक घंटा शाखा, यूनिफॉर्म पहनना, संघ नहीं है। स्वयंसेवकों को कहते हैं कि तुम्हे संघ से जो प्रेरणा मिली कि समाज के लिए कुछ करना चाहिए, उस प्रेरणा से आज ऐसे काम चल रहे हैं।

जैसे, कुछ स्वयंसेवकों ने सेवा भारती नाम का संगठन खड़ा किया है। यह सेवा भारती जो गरीब बस्तियां होती हैं, जिन झुग्गी झोपड़ी में गरीब लोग रहते हैं, उसको वे सेवा बस्ती कहते हैं। मेरी मोटी-मोटी जानकारी है, करीब वो बिना किसी सरकारी मदद के सवा लाख सेवा प्रकल्प को चलाते हैं, वहां जाना, समय देना, बच्चों को पढ़ाना, उनके स्वास्थ्य की चिंता करना, ऐसे-ऐसे काम समाज के सहयोग से करते हैं। उनके अंदर संस्कार लाना, उस इलाके में स्वच्छता का काम करना यह सब होता है। यह सवा लाख सेवा प्रकल्प एक छोटा नंबर नहीं है।

वैसे, संघ में से ही गढ़े हुए कुछ स्वयंसेवक हैं, वो वनवासी कल्याण आश्रम चलाते हैं और वो जंगलों में आदिवासियों के बीच में रहकर, आदिवासियों की सेवा करते हैं। 70 हजार से ज्यादा 'वन टीचर वन स्कूल' एकल विद्यालय चलाते हैं और अमेरिका में भी कुछ लोग हैं जो इस काम के लिए उन्हें शायद 10 डॉलर या 15 डॉलर का डोनेशन देते हैं और वो कहते हैं कि इस महीने एक 'कोका-कोला' नहीं पीनी है, एक 'कोका-कोला' मत पियो और उतना पैसा इस एकल विद्यालय को दो।

अब आदिवासी बच्चों को पढ़ाने के लिए 70 हजार एकल विद्यालय की व्यवस्था करना बड़ी सेवा है। ऐसे ही कुछ स्वयंसेवकों ने शिक्षा में क्रांति लाने के लिए विद्या भारती नाम का संगठन खड़ा किया। देश में उनके करीब 25 हजार स्कूल चलते हैं और 30 लाख छात्र 'हर समय' उनमें होते हैं और मैं मानता हूं अब तक करोड़ों विद्यार्थियों की बहुत ही कम दाम में पढ़ाई हो, और संस्कार की भी प्राथमिकता हो, जमीन से जुड़े हुए लोग हों, कुछ न कुछ हुनर सीख रहे हों, समाज पर बोझ न बनें, यानी जीवन के हर क्षेत्र में वे चाहे महिला हो, युवा हो, यहां तक मजदूर भी हों।

शायद मेंबरशिप के हिसाब से मैं कहूं तो 'भारतीय मजदूर संघ' है। इसके पचपन हजार के करीब यूनियन्स हैं और करोड़ों की संख्या में उनके मेंबर्स है। दुनिया में इतना बड़ा लेबर यूनियन नहीं होगा। लेफ्टिस्ट लोगों ने मजदूरों के मूवमेंटों को बड़ा बल दिया। जो लेबर मूवमेंट है, उनका नारा क्या होता है 'वर्कर्स ऑफ द वर्ल्ड यूनाइट', यानी यह भाव होता है 'दुनिया के मजदूरों, एक हो जाओ' फिर देख लेंगे। यह मजदूर संघ वाले क्या कहते हैं, जो आरएसएस के शाखा से निकले हुए स्वयंसेवक मजदूर संघ चलाते हैं? वो कहते है, 'वर्कर्स यूनाइट द वर्ल्ड'। लेफ्टिस्ट कहते हैं, 'वर्कर्स ऑफ द वर्ल्ड, यूनाइट' आरएसएस से निकले मजदूर संघ के स्वयंसेवक कहते है 'वर्कर्स, यूनाइट द वर्ल्ड' (मजदूरों, दुनिया को एक करो) दो शब्दों को इधर-उधर करने से यह दो कितने बड़े वाक्य बनते हैं, लेकिन दोनों में एक बड़ा वैचारिक बदलाव है।

संघ की शाखा से निकले हुए यह लोग जब अपनी रूचि, प्रकृति, प्रवृत्ति के अनुसार काम करते हैं, तो इस प्रकार की गतिविधियों को बल देते हैं। जब भारत के ऐसे कामों को देखेंगे, तो अनुभव में आएगा कि चकाचौंध वाली दुनिया से दूर रहते हुए सौ साल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने एक साधक की तरह समर्पित भाव से कार्य किया है। मेरा यह सौभाग्य रहा कि ऐसे पवित्र संगठन से जुड़कर मुझे जीवन के संस्कार मिले, मुझे जीवन का उद्देश्य मिला। मेरा यह भी सौभाग्य रहा कि मैं कुछ पल के लिए, कुछ समय के लिए संतों के बीच चला गया, वहां मुझे आध्यात्मिक संतुष्टि मिली, जीवन का लक्ष्य मिला, संतों के पास आध्यात्मिक स्थान मिला, स्वामी आत्मस्थानंद जी जैसे लोगों ने जीवन भर मेरा हाथ पकड़ कर के रखा। हर पल मेरा मार्गदर्शन करते रहे। तो रामकृष्ण मिशन और स्वामी विवेकानंद जी के विचार, संघ के सेवाभाव इन सब ने मुझे गढ़ने में बहुत बड़ी भूमिका अदा की है।

अब आदिवासी बच्चों को पढ़ाने के लिए 70 हजार एकल विद्यालय की व्यवस्था करना बड़ी सेवा है। ऐसे ही कुछ स्वयंसेवकों ने शिक्षा में क्रांति लाने के लिए विद्या भारती नाम का संगठन खड़ा किया। देश में उनके करीब 25 हजार स्कूल चलते हैं और 30 लाख छात्र 'हर समय' उनमें होते हैं और मैं मानता हूँ अब तक करोड़ों विद्यार्थियों की बहुत ही कम दाम में पढ़ाई हो, और संस्कार की भी प्राथमिकता हो, जमीन से जुड़े हुए लोग हों, कुछ न कुछ हुनर सीख रहे हों, समाज पर बोझ न बनें, यानी जीवन के हर क्षेत्र में वे चाहे महिला हो, युवा हो, यहां तक मजदूर भी हों।

आर्थिक न्याय और विकास के प्रेरणास्रोत

डॉ. प्रियंका सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
शम्भू दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद

डॉ. भीमराव राम जी अंबेडकर, जिन्हें बाबा साहेब अंबेडकर के नाम से जाना जाता है उनका जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के महू इंदौर के पास हुआ। भारतीय संविधान के शिल्पकार बाबा साहेब न केवल एक विधिवेत्ता थे बल्कि एक प्रख्यात राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, चिंतक, दार्शनिक, लेखक और संपादक भी थे। उन्होंने अपने जीवन में अस्पृश्यता जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया और वंचितों व दलितों के अधिकारों के लिए सतत् कार्य किया। उनकी दूरदर्शिता आज भी हमारे समाज और आर्थिक नीतियों को दिशा प्रदान करती है। जो न केवल अर्थव्यवस्था में संख्याओं व नीतियों तक सीमित है अपितु सामाजिक न्याय एवं समानताओं की भी आधारशिला है। पहली बार समाजसेवी जनार्दन सदाशिव रणपिसे ने 14 अप्रैल 1928 को पुणे में सार्वजनिक रूप से अंबेडकर जयन्ती का आयोजन किया।

विदेश में अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद जब बाबा साहब भारत वापस आए तो देश में जातिगत भेदभाव चरम पर था। अपनी बात जनमानस तक पहुंचाने के लिए एवं सामाजिक कुरीतियों के दुष्प्रभाव को समझाने के उद्देश्य से "मूकनायक" नामक समाचार पत्र की शुरुआत की। उनका मानना था की किसी भी देश का भविष्य, उसकी शक्ति इस बात पर निर्भर करती है कि उसका आर्थिक और सामाजिक ताना बाना कितना मजबूत है।

उनका यह दृष्टिकोण मात्र विकास तक सीमित नहीं था अपितु उन्होंने इसे सामाजिक न्याय से जोड़कर भी देखा।1947 में प्रकाशित "State and minority" में उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, श्रमिक अधिकारों, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार की बात की। 1923 में Out Cost Welfare Association की स्थापना जिसका उद्देश्य वंचित वर्ग में शिक्षा एवं संस्कृति का प्रसार होना था।1930 में उन्होंने काला राम मंदिर प्रवेश आंदोलन शुरू किया जो मानवाधिकारों और सामाजिक न्याय के लिए एक ऐतिहासिक संघर्ष था।

प्रत्येक क्षेत्र में उनकी दूरदर्शिता और लिए गये निर्णय आज भी प्रासंगिक हैं जहाँ एक तरफ़ उन्होंने कृषि सुधार हेतु सुझाव दिया कि यदि किसान एक साथ मिलकर खेती करें और संसाधनों को आपस में साझा करें जिससे उत्पादन भी बढ़ेगा और स्थिति भी सुदृढ़ होगी वही औद्योगिकरण के बारे में उनका दृष्टिकोण अत्यंत स्पष्ट था। गरीबी और बेरोजगारी मुक्त करना है तो बड़े उद्योगों की स्थापना करनी होगी। आज "मेक इन इण्डिया" और "आत्मनिर्भर भारत" जैसी योजनाएं उनके विचारों की गूंज है।

आर्थिक अस्थिरता के कारणों का गहन विश्लेषण और भारतीय रुपयों की स्थिरता के समाधान को उन्होंने 1923 में अपनी पुस्तक "The Problems of the Rupee: It's Origin and Its Solution" में लिखा है।

वित्तीय विकेंद्रीकरण की उनकी अवधारणा बहुत व्यापक है। उनका मानना था कि राज्य सरकारों व केंद्र सरकारों के मध्य संसाधनों का न्याय संगत साझेदारी होनी चाहिए क्योंकि यदि राष्ट्र को मजबूत होना है तो ऐसी आर्थिक नीतियों को धरातल पर उतारना आवश्यक होगा जहां विकास का लाभ प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचे। उन्होंने श्रमिक अधिकारों, न्यूनतम वेतन, मुफ्त शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को जन जन तक पहुंचाने की वकालत की जिससे सभी को समान अवसर प्राप्त हो सके। बाबा साहेब का आर्थिक चिंतन और नीतिगत योगदान भारतीय अर्थव्यवस्था के मूलभूत ढांचे को मजबूत करने में सहायक सिद्ध हुआ। जहां उनके शोध और विचारों ने भारतीय वित्त आयोग (Finance Commission of India) की स्थापना की वही भारतीय रिजर्व बैंक अभिनियम 1934 (RBI Act 1934) के दिशा निर्देशों के निर्माण में उनके द्वारा हिल्टन यंग कमीशन को प्रस्तुत किए गए विचारों का योगदान रहा। जिससे यह स्पष्ट है कि उनकी बौद्धिक क्षमता व समाज सुधारक दृष्टि समकालीन संदर्भ में भी प्रासंगिक बने हुए हैं और समाज के वैचारिक विमर्श को दिशा प्रदान कर रहे हैं।

अंबेडकर जयंती के अवसर पर, यह आवश्यक है कि हम उनके आर्थिक विचारों को न केवल स्मरण करें, बल्कि उन्हें नीति निर्माण और विकास योजनाओं में भी समाहित करें। आर्थिक न्याय और समानता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता समावेशी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रेरणा है। वर्तमान वैश्विक और राष्ट्रीय आर्थिक परिदृश्य में उनके विचार न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि सामाजिक- आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक आवश्यक दिशा-निर्देशक के रूप में कार्य करते हैं। अतः, यह हमारा दायित्व बनता है कि हम उनके सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप में लागू कर, भारत को आर्थिक समानता और सतत विकास के मार्ग पर अग्रसर करें।

भगवान महावीर के उपदेशों में निहित समरसता

पूनम जैन
स्वतंत्र लेखक

समरसता का अर्थ है सभी को अपने समान समझना। सामाजिक समरसता अर्थात् जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता का जड़मूल से उन्मूलन कर लोगों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द बढ़ाना तथा समाज के सभी वर्गो के मध्य एकता स्थापित करना। सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान है।

भगवान महावीर जैन धर्म के चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर थे। उनका जन्म करीब ढाई हजार वर्ष पहले (ईसा से 599 वर्ष पूर्व), वैशाली गणराज्य के क्षत्रियकुंड में क्षत्रिय परिवार में हुआ था। तीस वर्ष की आयु में उन्होंने संसार से विरक्त होकर राज वैभव त्याग दिया और संन्यास धारण कर सबके कल्याण के पथ पर निकल गये और समरसता का सिद्धांत पालन करने के लिए अपने विचारो को उपदेशों द्वारा बताया।

जब सारे मानवीय मूल्य मिथ्याभिमान द्वारा धूल-धूसरित कर दिए गए थे, दुर्बलों का उत्पीड़न चरम पर था, जनमानस अंधविश्वासों के अंधकूप में डूबा हुआ था, धन-लिप्सा और भोग-विलास के समक्ष त्याग और अपरिग्रह जैसे सूत्र बौने पड़ गए थे, उसी समय क्षितिज पर भगवान महावीर के आगमन से अहिंसा, सत्य, त्याग, अपरिग्रह, दया और करुणा की किरणें प्रस्फुटित हुईं। उन्होंने आत्मबल से अहिंसा का अस्त्र लेकर हिंसा समर्थक शक्तिशाली तंत्र, पाशविक वृत्तियों तथा सामाजिक कुरीतियों से पीड़ित जनमानस को मुक्ति दिलाई। भगवान महावीर ने जनमानस से कहा, 'अपना भय त्याग कर अपने स्वरूप को पहचानो। भय किससे? सबकी आत्मा समान हैं।' उन्होने संदेश दिया कि अधिक संग्रह की लालसा और संग्रह की सुरक्षा वर्तमान की सभी समस्या का मूल है। हिंसा उसी का परिणाम है। असत्य, चोरी उसकी परिक्रमा कर रहे हैं। कलह और युद्ध हिंसा के शिखर हैं। आजकल व्यक्ति में, परिवार में, राष्ट्रों में और अधिक स्वामित्व पाने की ही लड़ाई है। इसके समाधान के लिए उन्होंने अल्पेक्षा, अल्पारंभ, अल्प-परिग्रह का सिद्धांत दिया।

भगवान महावीर के समरसता प्रेरित उपदेश : दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा आप अपने साथ चाहते हैं। सभी प्राणियों को जीवन प्रिय है। अहिंसा ही परम धर्म है। अपने मन, वचन और कर्म से हिंसा नहीं करनी चाहिए। अहिंसा ही

सुख-शांति देने वाली है। शांति और आत्म-नियंत्रण अहिंसा है। हर जीवित प्राणी के प्रति दया भाव रखना ही अहिंसा है। घृणा का भाव रखने से मनुष्य का विनाश होता है। अहिंसा, संयम और तप ही धर्म है। जो धर्मात्मा है, जिसके मन में सदा धर्म रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

भगवान महावीर रंगभेद, जात-पात आदि के घोर विरोधी थे। उनके संघ में समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व था। जहां गौतम गौडीय, इंद्रभूति ब्राह्मण थे, दशार्ण भद्र तथा उदायण क्षत्रिय थे, शालिभद्र वैश्य थे और मैतार्य मुनि और हरिकेशी मुनि शुद्र थे। उन्होंने अपने उपदेशों का विस्तार सभी जाती-वर्गों के लिए सामान रूप से किया।

भगवान महावीर ने बड़े सूक्ष्म स्तर की अहिंसा (मन, वचन और कर्म) तीनों प्रकार से (सूक्ष्मतम जीवों के प्रति अहिंसा, ऐसे जीव तो दिखाई भी नहीं देते) का बड़ी ही गहराई में विवेचन किया है, जो समरसता लाने का मूल मंत्र है। समरसता पर पहला मूलभूत सिद्धांत देते हुए उन्होंने कहा 'अहिंसा परमो धर्म'। इस अहिंसा में समस्त जीवन का सार समाया है।

कायिक अहिंसा (कष्ट न देना) यह अहिंसा का सबसे स्थूल रूप है जिसमें हम किसी भी प्राणी को जान-अनजाने में अपनी काया द्वारा हानि नहीं पहुंचाते। मानव जीवन की अमूल्यता इसी तथ्य में निहित है कि उसके पास दूसरों को कष्ट से बचाने की अद्भुत शक्ति है। अतः स्थूल रूप से अहिंसा को मानने वाले किसी को भी पीड़ा, चोट, घाव आदि नहीं पहुंचाते, जो समरसता का पहला चरण है।

मानसिक अहिंसा (अनिष्ट नहीं सोचना) अहिंसा का सूक्ष्म स्तर है किसी भी प्राणी के लिए अनिष्ट, बुरा, हानिकारक नहीं सोचना। हिंसा से पूरित मनुष्य सामान्य रूप से दूसरों को क्षति पहुंचाने की वृत्ति से भरा होता है लेकिन अहिंसा के सूक्ष्म स्तर पर किसी की भी भावनाओं को जाने-अनजाने ठेस पहुँचाना मना है। यह समरसता के मार्ग का दूसरा चरण है।

बौद्धिक अहिंसा (घृणा न करना) अहिंसा के सूक्ष्तम स्तर पर ऐसा बौद्धिक विकास होता है कि जीवन में आने वाली किसी भी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति के प्रति घृणा के भाव का त्याग हो जाता है। हम निरंतर अपने आस-पास रही उन वस्तु, व्यक्ति, परिस्थितियों के प्रति घृणाभाव से भरे रहते हैं जो हमारे प्रतिकूल हों अथवा जिन्हें हम अपने अनुकूल न बना पा रहें हों। यह घृणा की भावना हमारे भीतर अशांति, असंतुलन व असामंजस्य उत्पन करती है। अतः अहिंसा का सूक्ष्मतर स्तर पर प्रयोग करने के लिए हमें किसी भी प्राणी से घृणा न करते हुए जीवन की हर परिस्थिति को सहर्ष स्वीकार करने की कला सीखनी होगी। हमें वस्तु-व्यक्ति-परिस्थिति को हटाने का प्रयत्न नहीं करना अपितु उनके प्रति अपना घृणा भाव हटाना है।

भगवान महावीर के द्वारा दिग्दर्शित पथ संसार में समरसता स्थापित करने का सुगम मार्ग है। ■

ट्रम्प प्रशासन द्वारा टैरिफ सम्बंधी लिए जा रहे निर्णयों का भारत पर प्रभाव

प्रहलाद सबनानी
सेवानिवृत्त पूर्व उप प्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक

यदि अमेरिका अपने देश में हो रहे उत्पादों के आयात पर टैरिफ में लगातार वृद्धि करता है तो यह उत्पाद अमेरिका में बहुत महंगे हो जाएंगे और इससे अमेरिकी नागरिकों पर मुद्रा स्फीति का दबाव बढ़ेगा। क्या अमेरिकी नागरिक इस व्यवस्था को लम्बे समय तक सहन कर पाएंगे।

अमेरिका में दिनांक 20 जनवरी 2025 को नव निर्वाचित राष्ट्रपति श्री डॉनल्ड ट्रम्प द्वारा ली गई शपथ के उपरांत ट्रम्प प्रशासन आर्थिक एवं अन्य क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण फैसले बहुत तेज गति से ले रहा है। इससे विश्व के कई देश प्रभावित हो रहे हैं एवं कई देशों को तो यह भी समझ में नहीं आ रहा है कि अंततः आगे आने वाले समय में इन फैसलों का प्रभाव इन देशों पर किस प्रकार होगा।

ट्रम्प प्रशासन अमेरिका में विभिन्न उत्पादों के हो रहे आयात पर टैरिफ की दरों को बढ़ा रहा है क्योंकि इन देशों द्वारा अमेरिका से आयात पर ये देश अधिक मात्रा में टैरिफ लगाते हैं। चीन, कनाडा एवं मेक्सिको से अमेरिका में होने वाले विभिन्न उत्पादों के आयात पर तो टैरिफ को बढ़ा भी दिया गया है। इसी प्रकार भारत के मामले में भी ट्रम्प प्रशासन का मानना है कि भारत, अमेरिका से आयातित कुछ उत्पादों पर 100 प्रतिशत तक का टैरिफ लगाता है अतः अमेरिका भी भारत से आयात किए जा रहे कुछ उत्पादों पर 100 प्रतिशत का टैरिफ लगाएगा। इस संदर्भ में हालांकि केवल भारत का नाम नहीं लिया गया है बल्कि "टिट फोर टेट" एवं "रेसिप्रोकल" के आधार पर कर लगाने की बात की जा रही है और यह समस्त देशों से अमेरिका में हो रहे आयात पर लागू किया जा सकता है एवं इसके लागू होने की दिनांक भी 2 अप्रैल 2025 तय कर दी गई है। इस प्रकार की नित नई घोषणाओं का असर अमेरिका सहित विभिन्न देशों के पूंजी (शेयर) बाजार पर स्पष्टतः दिखाई दे रहा है एवं शेयर बाजारों में डर का माहौल बन गया है।

अमेरिका में उपभोक्ता आधारित उत्पादों का आयात अधिक मात्रा में होता है और अब अमेरिका चाहता है कि इन उत्पादों का उत्पादन अमेरिका में ही प्रारम्भ हो ताकि इन उत्पादों का अमेरिका में आयात कम हो सके। दक्षिण कोरिया, जापान, कनाडा, मेक्सिको आदि जैसे देशों की अर्थव्यवस्था केवल कुछ क्षेत्रों पर ही टिकी हुई है अतः इन देशों पर अमेरिका में बदल रही नीतियों का अधिक विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। जबकि भारत एक विविध प्रकार की बहुत बड़ी अर्थव्यवस्था है, अतः भारत को कुछ क्षेत्रों में यदि नुकसान होगा तो कुछ क्षेत्रों में लाभ भी होने की प्रबल सम्भावना है। संभवतः अमेरिका ने भी अब यह एक तरह से स्वीकार कर लिया है कि भारत के कृषि क्षेत्र को टैरिफ युद्ध से बाहर रखा जा सकता है, क्योंकि भारत के किसानों पर इसका प्रभाव विपरीत रूप से पड़ता है। और, भारत यह किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करेगा कि भारत के किसानों को नुकसान हो। डेरी उत्पाद एवं समुद्रीय उत्पादों में भी आवश्यक खाने पीने की वस्तुएं शामिल हैं। भारत अपने देश में इन उत्पादों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए

उद्देश्य से इन उत्पादों के आयात पर टैरिफ लगाता है, ताकि अन्य देश सस्ते दामों पर इन उत्पादों को भारत के बाजार में डम्प नहीं कर सकें। साथ ही, भारत में मिडल क्लास की मात्रा में वृद्धि अभी हाल के कुछ वर्षों में प्रारम्भ हुई है अतः यह वर्ग देश में उत्पादित सस्ती वस्तुओं पर अधिक निर्भर है, यदि इन्हें आयातित महंगी वस्तुएं उपलब्ध कराई जाती हैं तो वह इन्हें सहन नहीं कर सकता है। अतः यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह अपने नागरिकों को सस्ते उत्पाद उपलब्ध करवाए। अन्यथा, यह वर्ग एक बार पुनः गरीबी रेखा के नीचे आ जाएगा। भारत ने मुद्रा स्फीति को भी कूटनीति के आधार पर नियंत्रण में रखने में सफलता प्राप्त की है।

अमेरिका द्वारा चीन, कनाडा एवं मेक्सिको पर लगाए गए टैरिफ के बढ़ाने के पश्चात इन देशों द्वारा भी अमेरिका से आयातित कुछ उत्पादों पर टैरिफ लगा दिए जाने के उपरांत अब विभिन्न देशों के बीच व्यापार युद्ध एक सच्चाई बनता जा रहा है। परंतु, क्या इसका असर भारत के विदेशी व्यापार पर भी पड़ने जा रहा है अथवा क्या कुछ ऐसे क्षेत्र भी ढूंढ़े जा सकते हैं जिनमें भारत लाभप्रद स्थिति में आ सकता है। जैसे, अपैरल (सिले हुए कपड़े) एवं नान अपैरल टेक्सटायल का मेक्सिको से अमेरिका को निर्यात प्रतिवर्ष लगभग 450 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहता है और मेक्सिको का अमेरिका को निर्यात के मामले में 8वां स्थान है। अमेरिका द्वारा मेक्सिको से आयात पर टैरिफ लगाए जाने के बाद टेक्सटायल से सम्बंधित उत्पाद अमेरिका में महंगे होने लगेंगे अतः इन उत्पादों का आयात अब अन्य देशों से किया जाएगा। मेक्सिको अमेरिका को 250 करोड़ अमेरिकी डॉलर के कॉटन अपैरल का निर्यात करता है एवं 150 करोड़ अमेरिकी डॉलर के नान कॉटन अपैरल का निर्यात करता है। कॉटन अपैरल के आयात के लिए अब अमेरिकी व्यापारी भारत की ओर देखने लगे हैं एवं इस संदर्भ में भारत के निर्यातकों के पास पूछताछ की मात्रा में वृद्धि देखी जा रही है। इन परिस्थितियों के बीच, टेक्स्टायल उद्योग के साथ ही, फार्मा क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र, इंजीनियरिंग क्षेत्र एवं श्रम आधारित उद्योग जैसे क्षेत्रों में भी भारत को लाभ हो सकता है।

यदि अमेरिका अपने देश में हो रहे उत्पादों के आयात पर टैरिफ में लगातार वृद्धि करता है तो यह उत्पाद अमेरिका में बहुत महंगे हो जाएंगे और इससे अमेरिकी नागरिकों पर मुद्रा स्फीति का दबाव बढ़ेगा। क्या अमेरिकी नागरिक इस व्यवस्था को लम्बे समय तक सहन कर पाएंगे। उदाहरण के तौर पर फार्मा क्षेत्र में भारत से जेनेरिक दवाईयों का निर्यात भारी मात्रा में होता है। यदि अमेरिका भारत के उत्पादों पर टैरिफ लगाता है तो इससे अधिक नुक्सान तो अमेरिकी नागरिकों को ही होने जा रहा है। भारत से आयात की जा रही सस्ती दवाएं अमेरिका में बहुत महंगी हो जाएंगी। इससे अंततः अमेरिकी नागरिकों के बीच असंतोष फैल सकता है। अतः अमेरिका के ट्रम्प प्रशासन के लिए टैरिफ को लम्बे समय तक बढ़ाते जाने की अपनी सीमाएं हैं।

यदि अमेरिका भारत के उत्पादों पर टैरिफ लगाता है तो इससे अधिक नुक्सान तो अमेरिकी नागरिकों को ही होने जा रहा है। भारत से आयात की जा रही सस्ती दवाएं अमेरिका में बहुत महंगी हो जाएंगी। इससे अंततः अमेरिकी नागरिकों के बीच असंतोष फैल सकता है। अतः अमेरिका के ट्रम्प प्रशासन के लिए टैरिफ को लम्बे समय तक बढ़ाते जाने की अपनी सीमाएं हैं।

अमेरिका विश्व का सबसे पुराना लोकतंत्र एवं सबसे बड़ा विकसित देश है और इस नाते अन्य देशों के प्रति अमेरिका की जवाबदारी भी है। टैरिफ बढ़ाए जाने के सम्बंध में इक तरफा कार्यवाही अमेरिका की अन्य देशों के साथ सौदेबाजी की क्षमता तो बढ़ा सकती है परंतु यह कूटनीति लम्बे समय तक काम नहीं आ सकती है। अमेरिकी नागरिकों के साथ साथ अन्य देशों में भी असंतोष फैलेगा। कोई भी व्यापारी नहीं चाहता कि नीतियों में अस्थिरता बनी रहे। इसका सीधा सीधा असर विश्व के समस्त स्टॉक मार्केट पर विपरीत रूप से पड़ता हुआ दिखाई भी दे रहा है।

अमेरिका को भी टैरिफ के संदर्भ में इस बात पर एक बार पुनः विचार करना होगा कि विकसित देशों पर तो टैरिफ लगाया जा सकता है क्योंकि अमेरिका एवं इन विकसित देशों में परिस्थितियां लगभग समान है। परंतु विकासशील देशों जैसे भारत आदि में भिन्न परिस्थितियों के बीच तुलनात्मक रूप से अधिक परेशानियों का सामना करते हुए विनिर्माण क्षेत्र में कार्य हो रहा है, अतः विकसित देशों एवं विकासशील देशों को एक ही तराजू में कैसे तौला जा सकता है। विकासशील देशों ने तो अभी हाल ही में विकास की राह पर चलना शुरू किया है और इन देशों को अपने करोड़ों नागरिकों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाना है। इनके लिए विकसित देश बनने में अभी लम्बा समय लगना है। अतः विकसित देशों को इन देशों को विशेष दर्जा देकर इनकी आर्थिक मदद करने के लिए आगे आना चाहिए। अमेरिका को विकसित देश बनने में 100 वर्ष से अधिक का समय लग गया है और फिर विकासशील देशों के साथ इनकी प्रतिस्पर्धा कैसे हो सकती है। विकासशील देशों को अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने का अधिकार है, अतः विकासशील देश तो टैरिफ लगा सकते हैं परंतु विकसित देशों को इस संदर्भ में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। ■

जुट गये स्वयंसेवक

आपातकाल में उदित हुआ प्रचंड जनांदोलन

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह

शोध प्रमुख, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा

> **संघ की विशाल संगठित शक्ति अधिनायक तंत्र के विरुद्ध चट्टान सी खड़ी हो सकती है इसका भान इंदिरा गांधी को पहले से था इसलिए आपातकाल लागू करते ही उन्होंने सबसे पहले संघ शक्ति को कुचलने का असफल प्रयास किया।**

पिछली शृंखला में हमने पढ़ा कि इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार ने लोकतंत्र का गला घोटकर देश में आपातकाल लगा दिया था। प्रबल विरोध न हो सके इसलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर भी प्रतिबंध लगा दिया और संघ के तत्कालीन सरसंघचालक बाला साहब देवरस को गिरफ्तार कर लिया। परीक्षा के ऐसे कठिन काल में स्वयंसेवकों ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए कमर कस ली। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की अधिनायकवादी नीतियों और भ्रष्टाचार के विरुद्ध जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में 'समग्र क्रांति' जन-आंदोलन चल रहा था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के समर्थन मिलने से यह आंदोलन एक संगठित राष्ट्रव्यापी आंदोलन बन गया। जयप्रकाश नारायण, अटल बिहारी वाजपेयी, लाल कृष्ण आडवाणी सहित विपक्षी दलों के अनेक नेताओं को जेल में बंद कर दिया गया था। संघ की विशाल संगठित शक्ति अधिनायक तंत्र के विरुद्ध चट्टान सी खड़ी हो सकती है इसका भान इंदिरा गांधी को पहले से था इसलिए आपातकाल लागू करते ही उन्होंने सबसे पहले संघ शक्ति को कुचलने का असफल प्रयास किया। संघ पर प्रतिबंध, संघ के वरिष्ठ अधिकारियों व कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी उसी का परिणाम था। संघ के स्वयंसेवकों ने चुनौती स्वीकार की। संघ के प्रचारकों और कार्यकर्ताओं ने भूमिगत रूप से नेतृत्व किया और संघ के सभी स्वयंसेवक कुंठित राजनीतिक षड्यंत्र के विरुद्ध जुट गये। संघ के समवैचारिक (आनुषांगिक) संगठनों जनसंघ, विद्यार्थी परिषद्, विश्व हिन्दू परिषद्, मजदूर संघ जैसे लगभग 30 संगठनों ने इस आंदोलन को सफल बनाने के लिए अपनी शक्ति लगा दी। संघ के भूमिगत नेतृत्व ने गैर कांग्रेसी राजनीतिक दलों, बुद्धिजीवियों और विभिन्न वैचारिक संगठनों को एक मंच पर लाने में समन्वयक की भूमिका का निर्वहन किया। अपनी प्रसिद्धि परांगमुखता की श्रेष्ठ परम्परा का अनुपालन करते हुए संघ ने इस आंदोलन को जयप्रकाश नारायण द्वारा घोषित 'लोक संघर्ष समिति' तथा 'छात्र युवा संगठन समिति' के नाम से ही चलाया। स्वयंसेवकों के अपेक्षित संगठन-कौशल से आततायी सरकार दबाव में आ गयी। इंदिरा गांधी सरकार ने संघ के आंदोलन से हट जाने के बदले जेल में बंद स्वयंसेवकों को छोड़ने और संघ से प्रतिबंध हटाने की बात कही। संघ ने आपातकाल हटाकर लोकतंत्र की पुनर्स्थापना से कम कुछ भी स्वीकार करने से मना कर दिया। रिकॉर्ड के अनुसार जेल जाने वाले एवं सत्याग्रही स्वयंसेवकों की संख्या लगभग 2 लाख थी जिन्होंने अनेक प्रताड़नाएं और यातनाएं सहते हुए राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखा। उस समय पूरे भारत में संघ के प्रचारकों की संख्या 1356 थी जिनमें से मात्र 189 को ही पुलिस पकड़ सकी, शेष ने भूमिगत रहकर आंदोलन का कुशलतापूर्वक संचालन किया।

अंततः इस प्रचंड जन-आंदोलन के सामने इंदिरा गांधी की तानाशाही को पराजित होना पड़ा, 21 मार्च 1977 को आपातकाल समाप्त हुआ, 22 मार्च को संघ

से भी प्रतिबंध हटा लिया गया। देश में चुनाव की घोषणा कर दी गयी। संघ के दो वरिष्ठ अधिकारियों प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) और दत्तोपंत ठेंगडी ने प्रयत्नपूर्वक चार बड़े राजनीतिक दलों को एक मंच पर लाकर 'जनता दल' के रूप में एक नए दल के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। देश के जनमानस की जीत हुई, देश में लोकतंत्र की पुनर्स्थापना हुई।

जयप्रकाश नारायण स्वयंसेवकों की निष्ठा और समर्पण को देखकर मंत्रमुग्ध थे। उन्होंने हृदय से स्वयंसेवकों के प्रति अपना उदगार प्रस्तुत किये। दिसंबर 1977 में आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्र में भयंकर चक्रवात से बड़ी हानि हुई, प्रतिकूल परिस्थितियों में स्वयंसेवकों ने सेवाकार्य किया। 1977 में रज्जू भैय्या सह सरकार्यवाह और 1978 में उन्हें सरकार्यवाह चयनित किया गया। इसी वर्ष दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना हुई। मध्य भारत प्रान्तिक शिविर इंदौर में 6000 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। वर्ष 1979 में विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा द्वितीय विश्व हिन्दू सम्मलेन का आयोजन हुआ। अगस्त 1979 में गुजरात के मोरबी की बाढ़ में सेवाकार्य में जुटे स्वयंसेवकों द्वारा 12000 परिवारों को राहत पहुंचाई गयी। 1980 में व्यापक जनसंपर्क अभियान में स्वयंसेवकों ने 95000 गांवों और एक करोड़ परिवारों से संपर्क किया। 1980 में जनता दल के नेताओं ने एक ही समय में संघ और जनता दल दोनों की सदस्यता को लेकर बाधा खड़ी की जिसके फलस्वरूप भारतीय जनता पार्टी अस्तित्व में आई। वर्ष 1981 में तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम में 800 हिन्दू परिवारों का इस्लाम में मतान्तरण कर दिया गया, तब स्वयंसेवकों ने 'हिन्दू मुन्नानी' का गठन किया और हिन्दू पुनर्जागरण हेतु आंदोलन चलाया। इस अवसर पर अलगाववादी और हिन्दू विरोधी द्रविड़ मुनेत्र कड़गम और द्रविड़ कषगम जैसे दलों की पोल भी खुल गयी जिन्होंने मुस्लिम लीग और जमात-ए-इस्लामी के साथ मिलकर हिन्दू विरोधी जिहाद छेड़ा। इन्होने हिन्दू मंदिरों का बहिष्कार किया जिसका प्रतिउत्तर देते 'हिन्दू मुन्नानी' के आह्वन पर भक्तगण भारी संख्या में मंदिरों में पहुंचे। धीरे-धीरे DMK, DK, AIDMK, Congress जैसे विरोधी दलों के कर्मठ हिन्दू कार्यकर्ताओं ने भी सामजिक हिन्दुत्व के लिए संघ के प्रयासों को सराहा और वे हिन्दू सम्मेलनों में उपस्थित होने लगे। जनवरी 1981 में संस्कार भारती की स्थापना की गई। 1982 में कर्नाटक प्रान्तिक शिविर बेंगलुरु में 25000 स्वयंसेवकों ने प्रतिभाग किया। फरवरी 1981 में तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में सांप्रदायिक दंगे होने पर स्वयंसेवकों द्वारा गठित 'हिन्दू ओट्टरूमई मैय्यम' (हिन्दू एकता मंच) के माध्यम से सभी जातियों के 100 से ज्यादा प्रतिनिधि जुड़े और व्यापक मोर्चा सम्भाला। जनवरी 1984 में उपद्रवग्रस्त और मतान्तरण वाले क्षेत्र में पदयात्रा निकालकर सभी जातियों तथा उपजातियों का सम्मेलन आयोजित किया गया। 18 मार्च 1984 को रामनाड के मुरुगन मंदिर में 'पंगुनी उथीरम' उत्सव शांतिपूर्वक सम्पन्न हुआ जबकि पहले इसे लेकर दंगे भड़क जाते थे। इस उत्सव में हरिजन एवं अन्यजन का सद्भाव आकर्षण का केंद्र था। रामनाड राजपरिवार के सदस्य आत्मनाथ स्वामी तब जिला संघचालक थे। उन्होंने सामाजिक समरसता हेतु महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1984 में विश्व हिन्दू परिषद् की 'ज्ञानरथम् परियोजना' भी आई। आतंकवाद से जूझते पंजाब में विश्व हिन्दू परिषद् ने मार्च 1983 में एक लाख लोगों की शोभायात्रा निकाली, जिसमें हिन्दू समाज के सभी वर्गों के लोगों सहित हजारों केशधारी सिख बंधुओं ने भी सहभागिता की।

1980 में जनता दल के नेताओं ने एक ही समय में संघ और जनता दल दोनों की सदस्यता को लेकर बाधा खड़ी की जिसके फलस्वरूप भारतीय जनता पार्टी अस्तित्व में आई।

'भारत माता' और 'गंगा माता' के प्रति आस्था और सम्मान के लिए जनमानस को व्यापक स्तर पर जागरूक करने हेतु 1983 में विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा 'एकात्म यज्ञ' का आयोजन किया गया। इसी वर्ष महाराष्ट्र प्रान्तिक शिविर पुणे में 35000 स्वयंसेवक सम्मिलित हुए।

'ऑपरेशन ब्लू स्टार' के ठीक पूर्व छात्रों, शिक्षकों और ज्ञान प्रबोधिनी के सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित 115 कार्यकर्ताओं ने पंजाब में शांति यात्रा की। 5 जून 1984 को भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' के तहत पवित्र श्री हरि मंदिर साहिब को आतंकवादियों से मुक्त कराया। परिणामस्वरूप खालिस्तान समर्थक आतंकियों के ईशारे पर 31 अक्टूबर 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की सिख सुरक्षाकर्मियों द्वारा हत्या कर दी गई जिसके बाद दिल्ली में कांग्रेसियों द्वारा सिख भाइयों का नरसंहार किया गया। उस समय सिख भाइयों और बहनों की रक्षा करने में स्वयंसेवकों ने अपना जीवन दांव पर लगा दिया। सैंकड़ों सिख परिवारों को स्वयंसेवकों के घरों में शरण दी गई और विपदाग्रस्त लोगों के लिए सहायता शिविर खोले गए। 6 मई 1984 को चेम्सफोर्ड क्लब नई दिल्ली में विश्व हिन्दू परिषद् ने पंजाब एकता सम्मेलन का आयोजन किया। ऑपरेशन ब्लू स्टार के पश्चात कारसेवा के लिए सिख ग्रंथियों के आह्वान पर स्वयंसेवकों ने भी आगे बढ़कर नगर संघचालक के नेतृत्व में स्वर्ण मंदिर के पुनर्निर्माण हेतु कार सेवा की, बड़ी संख्या में गणवेशधारी स्वयंसेवक कारसेवा करते देखे गये। 1985 में संघ स्थापना के 60 वर्ष पूर्ण होने पर पूरे देश में जनजागरण के अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इस शृंखला में इतना ही, अगली शृंखला में चर्चा करेंगे संघ यात्रा-7 के अगले दशक की...

संगम का तट, माँ गंगा और अंतर्मन की पुकार

प्रणय कुमार
शिक्षाविद

सनातनी एकता व सामाजिक समरसता की भावभूमि पर विभाजन की विषबेलें कभी पनप और फल-फूल ही नहीं सकती, इसीलिए संगम का विहंगम दृश्य देखकर विभाजककनकारी शक्तियों की आँतों में मरोड़ आना स्वाभाविक था। माँ, तुम्हारे तट पर उमड़ी भावधारा में एक-एक ने यही अनुभव किया कि यदि हम अकेले हैं, अलग-अलग हैं तो मात्र बिंदु हैं और यदि एक हैं, संग-साथ हैं तो विशाल-विराट सिंधु हैं।

माँ तुम्हारी गोद की समीपता में जीवन की सारी तपन और थकन खो जाती है। सनातन संस्कृति व परंपरा के वामी द्रोहियों, क्षद्म पंथनिरपेक्षतावादियों और "प्रलय के भविष्यवक्ताओं एवं गिद्धों" ने भले ही महाकुंभ के आयोजन को बाधित करने के लिए बहुविध प्रयत्न किए हों, आस्थावान सनातनियों के हौसलों को पस्त करने के लिए प्रपंच व षड्यंत्र रचे हों, पर जो भी तुम्हारे तट पर आया, जीवन की निरंतरता, व्यापकता, वास्तविकता एवं विस्तार का गहरा बोध लेकर वापस लौटा। यों कहें कि वह आया तो रिक्त, अधूरा या अकेला, पर लौटा पूर्ण और विराट होकर। तुम्हारे तट और जल का संस्पर्श पाते ही जाति, पंथ, भाषा, लिंग, वर्ग, क्षेत्र आदि की सभी कल्पित व कृत्रिम दीवारें स्वतः ढह गईं। तुम्हारे तट पर जो भी आया, वह केवल इतनी-सी पहचान लेकर आया कि तुम उसकी माँ हो और वह तुम्हारी संतान! माँ, तुम्हारे प्रति तुम्हारी सनातनी संतानों की श्रद्धा व आस्था देखकर आज पूरी दुनिया चकित व चमत्कृत है। जिन युवाओं ने विविधता में एकता की बात अब तक केवल किताबों में पढ़ी थीं, नारों और सामूहिक उद्गारों में सुनी थीं, उन सबने तुम्हारे तट पर पहुंचकर उसकी प्रत्यक्ष एवं जीवंत अनुभूति की। भिन्न-भिन्न अस्मिताओं व पृथक पहचान को उभारकर दशकों से समाज की भावभूमि पर विभाजन की जो विषबेलें रोपी गईं थीं, तुम्हारा अमृत-रस पाकर वे सब मुरझा-कुंभला गईं, जड़-मूल समेत नष्ट हो गईं। वस्तुतः सनातनी एकता व सामाजिक समरसता की भावभूमि पर विभाजन की विषबेलें कभी पनप और फल-फूल ही नहीं सकती, इसीलिए संगम का विहंगम दृश्य देखकर विभाजकनकारी शक्तियों की आँतों में मरोड़ आना स्वाभाविक था। माँ, तुम्हारे तट पर उमड़ी भावधारा में एक-एक ने यही अनुभव किया कि यदि हम अकेले हैं, अलग-अलग हैं तो मात्र बिंदु हैं और यदि एक हैं, संग-साथ हैं तो विशाल-विराट सिंधु हैं।

माँ, तुम्हारे पास आकर चरैवेति-चरैवेति अथवा नेति-नेति की प्रत्यक्ष अनुभूति होने लगती है। तुम्हारे तट पर आकर एक ओर 'गति ही जीवन है, जड़ता ही मृत्यु है' की

प्रत्यक्ष प्रतीति होती है तो दूसरी ओर मन में एक हूक भी उठती है कि जिस सनातन संस्कृति का ध्वज कभी अखिल विश्व में फहराया करता था, आज उसके अपने देश में उसे अपमानित-अवमूल्यित करने के पग-प्रतिपग पर षड्यंत्र रचे जा रहे हैं! जिन सभ्यताओं ने हमारी ज्ञान-परंपरा का परस्पर घुटनों के बल चलना सीखा आज उनके 'आका-अनुयायी' बड़े-बड़े दावे कर रहे हैं, 'ज्ञान' बघार रहे हैं। वे छल-बल-दल के साथ मतांतरण का खेल चला रहे हैं। तुम तो जानती हो माते कि सनातन घटा, देश बंटा, यह मात्र नारा नहीं, ठोस यथार्थ है। हमने अतीत में अपने प्राणप्रिय भारतवर्ष का विभाजन देखा है। खंडित राष्ट्र को स्वीकार करने की वेदना व विवशता को भला तुमसे बेहतर और कौन समझ सकता है, माते! अपनी संतानों में कुछ ऐसी प्रेरणा, कुछ ऐसे भाव जागृत करो माते कि अखंड भारत केवल उनका स्वप्न ही नहीं, संकल्प भी बने! कुछ ऐसी चेतना जगाओ माते कि वे केवल पर्व-त्योहारों, आयोजनों-उत्सवों में ही नहीं, बल्कि जीवन के हर पल-अवसर में सनातनी होने के गौरवबोध से भरे रहें! माते, तुम तो जानती हो कि सनातनी होना हीनता की नहीं, गर्व की विषयवस्तु है। तुम यह भी जानती हो माते कि हिंसा, कलह और आतंक से पीड़ित विश्व के कल्याण के लिए ही सनातन का सारा चिंतन व दर्शन है। इसलिए सनातन की जय में विश्व की जय है, सनातन के संरक्षण में जगती का त्राण है।

माँ, अमूर्त्त भावों को शब्द दे पाना हम जैसे साधारण मनुष्यों के सामर्थ्य से बाहर है, बस इतना जानो कि जब भी तुम्हारे तट पर आया, विस्मय एवं विह्वलता से तुम्हें ही निहारता रहा। श्रद्धा चुपचाप आँखों से उमड़ मूक अभिव्यक्ति का मार्ग ढूंढती रही। तुम न जाने कितने युगों, कितने जन्मों से धरती और मानव-जीवन की आस और साध पूरी करती आयी हो! तुम्हारे जल से ही धरती का तृण-तृण मुस्काता है, यह शस्य-श्यामला धरती तुमसे ही तो जीवन पाती है, संपूर्ण भारतवर्ष नहीं तो कम-से-कम उत्तर भारत का कोना-कोना तुमसे ही तो आबाद है,

जिन सभ्यताओं ने हमारी ज्ञान-परंपरा का परसपर घुटनों के बल चलना सीखा आज उनके 'आका-अनुयायी' बड़े-बड़े दावे कर रहे हैं, 'ज्ञान' बघार रहे हैं। वे छल-बल-दल के साथ मतांतरण का खेल चला रहे हैं। तुम तो जानती हो माते कि सनातन घटा, देश बंटा, यह मात्र नारा नहीं, ठोस यथार्थ है। हमने अतीत में अपने प्राणप्रिय भारतवर्ष का विभाजन देखा है।

सुख-समृद्धि, धन-धान्य सब तुमसे ही तो है, तुम्हारे संस्पर्श मात्र से निर्मलता-पवित्रता का संचार होने लगता है, तुमने ही हमारी सुप्त संवेदनाओं को स्वर दिया है, सामूहिक चेतना को बल दिया है !

तमाम अवरोधों- आक्रमणों- झंझावातों- संक्रमणों के मध्य भी तुमने भारत की सांस्कृतिक-धारा को कभी सूखने नहीं दिया, तुम हमारे पुरुषार्थों की मौन साक्षी रही, उत्थान-पतन की साक्षी रही, संघर्षों, स्वप्नों व संकल्पों की साक्षी रही! तुम एक ओर प्राणों की बाजी लगाकर भी धर्म और संस्कृति की टेक न छोड़ने वाली - अपनी वीर एवं पराक्रमी संतानों के साहस, शौर्य व पराक्रम की साक्षी रही तो दूसरी ओर आक्रांताओं के अन्याय-अत्याचार-दबाव से भयभीत होकर मत व मजहब बदल लेने वाले पुरखों की अकर्मण्यता और भीरुता का भार भी चुपचाप ढोती रही! तुम तो जानती व समझती हो माते कि मत व मजहब बदलने से पुरखे नहीं बदलते! इसलिए यह आस और विश्वास दो माते कि एक दिन ऐसे तमाम भूले-भटके लोग भी अतीत की भूलों का प्रायश्चित करते हुए तुम्हारी गोद की शीतल छाया में लौट आएँ! माँ, तुमने अपने तट पर आए पुण्यात्माओं को भी गले लगाया तो दूसरी ओर सदियों से ही चंद लालची-स्वार्थी लोगों के बुरे कर्मों का पाप भी धोया। तुमने अपने-पराए के भेद से परे जगती के कल्याण के लिए अपने अस्तित्व तक को दाँव पर लगा दिया! कोटि-कोटि संतानों की जीवनदायिनी माँ, तुम्हारे पवित्र, प्रांजल, पुण्यदायी, प्रवहमान धारा के दूषित एवं प्रभावित होते जाने को लेकर तुम्हारी सरोकरधर्मी संतानें निश्चित चिंता करेंगीं, बल्कि इस महाकुंभ से लौटकर वे चिंता से आगे उसके लिए उद्यम व पुरुषार्थ भी करेंगीं। इसके लिए उसे परिश्रम व पुरुषार्थ का वर दो माते! हो सके तो इस मोर्चे पर स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भी दशकों तक दिखाई गई हमारी अकर्मण्यता व अक्षम्यता के लिए भी हमें क्षमा करना माते!

माँ, तुम तो जीवनदायिनी, वरदायिनी, मुक्तिदायिनी, बलदायिनी हो! एक आशीर्वाद दो माते! भारत की सामूहिक-सनातन चेतना को एक बार फिर स्वर दो, इसे सदा-सदा के लिए जाग्रत कर दो! सदियों की पराधीनता और औपनिवेशिक मानसिकता ने इसे आत्मविस्मृति एवं स्वाभिमानशून्यता से भर दिया है। यह केवल तन से आजाद हुआ है, मन से आज भी इसकी पोर-पोर में गुलामी की ग्रंथियां गहरे पैठी हैं। मैकॉले-मार्क्स के मानस-पुत्रों ने उन गांठों को दशकों पाला, पोसा और सींचा है। अतः उन गांठों से हमारी युवा पीढ़ी को हमेशा-हमेशा के लिए मुक्त होने की युक्ति, बुद्धि व शक्ति दो माते! भारत के सांस्कृतिक सूर्य को सदा आलोकित रहने का अभय वर दो माते! सभ्यता के जिस सूरज को तुमने परवान चढ़ते देखा, संस्कृति की जिन उजली किरणों से तुमने दिक्-दिगंत को प्रकाशित होते देखा, उसका ही अस्त कैसे देख और सह सकोगी, माँ! अपनी संततियों को एक बार फिर से स्वावलंबी, स्वाभिमानी, गौरवशाली, संकल्पधर्मी, संस्कृतिप्रेमी बना दो! एक बार फिर इस आलोकधर्मी संस्कृति को चमकने के लिए विस्तृत- वैश्विक- नवीन आकाश दो! इस देश की संततियों को सच्चे गौरव व भारतबोध से भर दो, माते!

विकसित भारत की नींव है स्वस्थ भारत

डॉ. अनिल कुमार निगम
वरिष्ठ पत्रकार

आज भी हमारे देश में गैर-संचारी रोगों की चुनौती बनी हुई है। मधुमेह, कैंसर और हृदय रोग जैसी बीमारियों के कारण भारत में 60 प्रतिशत से अधिक मौतें होती हैं। इसके अलावा प्रति व्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों की संख्या अत्यंत कम है और इस क्षेत्र में सरकारी व्यय भी बेहद सीमित है। एक और गंभीर समस्या यह है कि चिकित्सक-रोगी अनुपात में भारी अंतर बना हुआ है।

भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली जटिल और बहुआयामी है, जहां सरकारी और निजी दोनों ही सुविधाएं 144 करोड़ से अधिक आबादी को चिकित्सा सेवाएं प्रदान कर रही हैं। सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में सुधार के लिये कई पहल की शुरुआत की है, जैसे आयुष्मान भारत योजना, जिसका उद्देश्य 50 करोड़ से अधिक लोगों को स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करना है। हालांकि, उल्लेखनीय प्रगति के बावजूद, स्वास्थ्य सेवा प्रणाली अभी भी कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जिनमें अपर्याप्त वित्तपोषण, स्वास्थ्य कर्मियों की कमी और आधारभूत संरचना की सीमाएं शामिल हैं।

भारत का स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ रखता है क्योंकि इसमें सुप्रशिक्षित चिकित्सा पेशेवरों की एक बड़ी संख्या, एक सुदृढ़ फार्मा उद्योग, और उभरते हुए नवाचार-केंद्रित टेक उद्यमी शामिल हैं। साथ ही, 750 मिलियन से अधिक स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं और वेंचर कैपिटल फंड तक आसान पहुंच के कारण, स्वास्थ्य क्षेत्र तीव्र विकास की ओर अग्रसर है। चिकित्सा उपकरणों के विकास और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिये भारत में लगभग 50 से अधिक क्लस्टर स्थापित किए जा रहे हैं। वर्ष 2024 तक भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र 7. 5 मिलियन लोगों को रोज़गार प्रदान कर रहा था और 2017–22 के दौरान 2.7 मिलियन अतिरिक्त नौकरियां सृजित हुईं।

भारत सरकार के विभिन्न प्रयासों के बावजूद देश की स्वास्थ्य सेवा को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। देश के विभिन्न शहरी इलाकों और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अस्पतालों और बुनियादी चिकित्सा सुविधाओं की कमी बनी हुई है। नेशनल हेल्थ प्रोफाइल के अनुसार, भारत में प्रति 1000 जनसंख्या पर केवल 0.9 अस्पताल बेड उपलब्ध हैं, जिनमें से केवल 30 प्रतिशत ही ग्रामीण क्षेत्रों में हैं।

यही नहीं, स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में असमानता देखने को मिलती है। निजी और सरकारी सुविधाओं के बीच व्यापक असमानता है, और कई निजी स्वास्थ्य केंद्रों में अपर्याप्त नियमन के कारण गुणवत्तापूर्ण देखभाल की कमी देखी जाती है।

आज भी हमारे देश में गैर-संचारी रोगों

की चुनौती बनी हुई है। मधुमेह, कैंसर और हृदय रोग जैसी बीमारियों के कारण भारत में 60 प्रतिशत से अधिक मौतें होती हैं।इसके अलावा प्रति व्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों की संख्या अत्यंत कम है और इस क्षेत्र में सरकारी व्यय भी बेहद सीमित है।

एक और गंभीर समस्या यह है कि चिकित्सक-रोगी अनुपात में भारी अंतर बना हुआ है। इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ के अनुसार, 2030 तक भारत को 20 लाख चिकित्सकों की आवश्यकता होगी। वर्तमान में, सरकारी अस्पतालों में 11000 से अधिक रोगियों पर एक चिकित्सक उपलब्ध है, जो कि डब्यूएचओ की 1:1000 की अनुशंसा से बहुत कम है।

समाधान एवं दिशा : स्वास्थ्य विभाग को स्वस्थ बनाने के लिए इस क्षेत्र में आधारभूत संरचना और मानव संसाधन में सुधार लाना आवश्यक है। स्वास्थ्य सुविधाओं के निर्माण और उन्नयन, चिकित्सा अनुसंधान में निवेश, और स्वास्थ्य सेवा वित्तपोषण में वृद्धि करना जरूरी है। मेडिकल स्कूलों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या बढ़ाकर स्वास्थ्यकर्मियों की कमी को दूर किया जाना चाहिए। गुणवत्ता नियंत्रण उपायों, स्वतंत्र निरीक्षण तंत्र, और स्वास्थ्य सेवाओं के प्रभावी नियमन को लागू किया जाना चाहिए।

भारत में साइबर हमले के खतरे बहुत अधिक बढ़ गए हैं। कुछ अरसे पूर्व दिल्ली स्थिति अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान पर हुए रैंसमवेयर हमले जैसी घटनाओं को देखते हुए स्वास्थ्य अवसंरचना और डेटा की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु मजबूत साइबर सुरक्षा उपाय आवश्यक है। इसके अलावा मानव, पशु और पर्यावरण स्वास्थ्य को एकीकृत करते हुए समग्र स्वास्थ्य पहल की ओर बढ़ना समाज हित में होगा।

यहां पर मैं भारत के स्वच्छ भारत मिशन की चर्चा विशेष रूप से करना चाहूंगा। भारत की विशाल और विविध आबादी के कारण

सार्वभौमिक स्वच्छता एक महत्वपूर्ण चुनौती है। 2014 में शुरू किए गए स्वच्छ भारत मिशन ने स्वच्छता सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने पहले चरण की सफलता के बाद, सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन 2.0 की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य शेष चुनौतियों का समाधान करना और पहले चरण की उपलब्धियों को और सुदृढ़ बनाना है।

नेशनल हेल्थ प्रोफाइल के अनुसार, भारत में प्रति 1000 जनसंख्या पर केवल 0.9 अस्पताल बेड उपलब्ध हैं, जिनमें से केवल 30 प्रतिशत ही ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। यही नहीं, स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में असमानता देखने को मिलती है। निजी और सरकारी सुविधाओं के बीच व्यापक असमानता है, और कई निजी स्वास्थ्य केंद्रों में अपर्याप्त नियमन के कारण गुणवत्तापूर्ण देखभाल की कमी देखी जाती है।

स्वच्छ भारत मिशन 1.0 के तहत प्रमुख उपलब्धियां : -100 मिलियन से अधिक घरेलू शौचालयों का निर्माण किया गया।

- खुले में शौच मुक्त (ODF) का दर्जा प्राप्त करने वाले राज्यों और जिलों की संख्या में वृद्धि हुई।

- स्वच्छता प्रथाओं में सुधार और जलजनित रोगों में कमी आई।

स्वच्छ भारत मिशन 2.0 का उद्देश्य इन उपलब्धियों को सुदृढ़ करते हुए ठोस और तरल कचरा प्रबंधन, स्वच्छता व्यवहार को बढ़ावा देना और शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में संपूर्ण स्वच्छता समाधान लागू करना है।

भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को प्रभावी बनाने के लिये सरकार और निजी क्षेत्र को मिलकर कार्य करना होगा।आधारभूत संरचना में निवेश, स्वास्थ्यकर्मियों की संख्या में वृद्धि, और स्वास्थ्य सेवा में पारदर्शिता लाकर देश के नागरिकों को सुलभ और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं प्रदान की जा सकती हैं। साथ ही, स्वच्छ भारत मिशन 2.0 जैसी पहल स्वास्थ्य सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। एक सशक्त स्वास्थ्य प्रणाली के माध्यम से ही भारत एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

महाकुम्भ 2025
आस्था के जनसमुद्र में समरसता की लहरें

शिवेश प्रताप
प्रबंध सलाहकार व लोकनीति विश्लेषक

> **महाकुम्भ 2025 ने प्रमाणित किया है कि भारत का मूल स्वरुप इसकी आध्यात्मिक निरंतरता में है, न कि उन सतही भेदों में जो ऐतिहासिक विकृतियों के माध्यम से थोपी गई हैं। जहां राजनीतिक विचारधाराएं समाज को संकीर्ण पहचान में बांटने का प्रयास करती हैं, वहीं महाकुम्भ ने एक ऐसा दिव्य मंच प्रदान किया है जहां करोड़ों लोग अस्थायी पहचानों से परे भारत के एकात्म तत्व से अपनी पहचान सिद्ध करते हैं।**

महाकुम्भ 2025 न केवल आस्था और आध्यात्मिकता का भव्य संगम रहा, बल्कि इसकी सफलता ने उन सभी झूठे नैरेटिव्स को ध्वस्त किया, जो लम्बे समय से सनातन धर्म के विरुद्ध प्रचारित किए गए थे। सनातन हिन्दू धर्म को जाति, वर्ग, भाषा और क्षेत्रीय विभाजनों में तोड़कर उसे संकीर्ण करने का प्रयास किया गया था, लेकिन महाकुम्भ का विराट आयोजन और इसकी जन स्वीकार्यता और सफलता से उपजी भारत की सांस्कृतिक सॉफ्ट पॉवर अब पाखण्ड खंडिनी पताका की भांति ऐसे विश्वाकाश पर लहरा रही है जैसे आदिशंकर की दिग्विजयी धर्म ध्वजा।

देश-विदेश के कोने-कोने से आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं ने बिना किसी भेदभाव के, एक ही पवित्र जल में आस्था की डुबकी लगाकर विश्व को सन्देश दे दिया कि सनातन धर्म की जड़ें समरसता, एकात्म और आध्यात्मिक चेतना से पोषित हैं। यहां न कोई ऊँच-नीच है, न कोई बाहरी-भीतरी का भेद, बल्कि सभी जातियों, संप्रदायों, मतों, भाषाओं और प्रांतों से आए लोग केवल एक ही चेतना में विलीन होते हैं और वह चेतना है सत्य सनातन धर्म की चेतना। महाकुम्भ इस बात का जीवंत उदाहरण बनेगा कि हिन्दू धर्म मात्र पूजा-पद्धति का नाम नहीं, बल्कि यह एक सनातन जीवन दर्शन है, जो संपूर्ण मानवता के कल्याण की कामना करता है और किसी भी प्रकार के विभाजन को अस्वीकार करता है।

2019 में एक चाय कंपनी द्वारा भारतीय संस्कृति के दुष्प्रचार के लिए एक टीवी प्रचार बनाया गया जिसमें यह दिखाया गया की लोग अपने बुजुर्गों को महाकुम्भ में छोड़ देते हैं। इस दुष्प्रचार की भारत में उस समय घोर आलोचना हुई थी। लेकिन हाल के वर्षों में टूलकिट, नैरेटिव आदि के दुष्चक्र का पर्दाफाश होने से भारतीय समाज में आई जागरूकता ने ऐसे छद्म प्रयासों की कलई खोल दी है। महाकुम्भ 2025 के दौरान अनेक तस्वीरें सामने आईं, जिसने ऐसे धूर्त प्रचारतंत्र के झूठे नैरेटिव को भी ध्वस्त कर दिया।

परिवार प्रबोधन का सुखद सन्देश : महाकुम्भ 2025 से दो स्त्रियों के चित्र अधिक वायरल हुए। एक घटना में बहू अपनी सास को अपनी पीठ पर ले जाती हुई दिख रही है और दूसरी तस्वीर में एक बहू भीड़ में खो गई अपनी सास के लिए फूट-फूटकर रो रही है। ये दृश्य इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय परिवारों की नींव कितनी मजबूत और प्रेममय है। ये तस्वीरें केवल व्यक्तिगत घटनाएं नहीं हैं, बल्कि यह 'सत्य स्वरुप भारत' की सच्चाई को दर्शाती हैं। तमाम छोटे-मोटे मतभेदों के बावजूद हमारी संस्कृति, संस्कार और परम्पराएं, परिवार व्यवस्था के द्वारा सास से बहू को स्थानांतरित होती हैं जहां वे दोनों अपने मूल परिवार की परम्पराओं को तज अपने पति की परिवार परंपरा को आगे बढाने का कार्य करती हैं। भारतीय नारी हजारों वर्षों

से यह सांस्कृतिक हस्तांतरण अक्षुण्ण ढंग से निभाती आ रही हैं। सास न केवल एक मार्गदर्शक होती हैं, बल्कि बहू के लिए मां का स्थान भी लेती हैं। दूसरी ओर, समय के साथ बहू के भीतर भी सास को उनके अनुभव और त्याग के लिए आदर आ जाता है, यह एक सामाजिक प्रक्रिया है।

भारतीय परिवारों की सच्ची शक्ति रक्त संबंधों से अधिक उनके गहरे और भावनात्मक रिश्तों में निहित है। हमारी संस्कृति में परिवार केवल खून के रिश्तों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आपसी प्यार, आदर और देखभाल पर आधारित एक गहरी परंपरा है जिसका विस्तार घर की ड्योढ़ी से निकलकर गाँव के घर-घर तक विस्तारित होता है। दुर्भाग्यवश, वैश्विक प्रचार तंत्र ने लंबे समय से भारतीय परिवार व्यवस्था को गलत तरीके से पेश करने की कोशिश की है। सास-बहू के रिश्तों को खटास और तनाव के प्रतीक के रूप में दिखाने वाले धारावाहिक और फिल्में हमारी वास्तविकता से कोसों दूर हैं।

विविधता में एकता का दिव्य साक्षात्कार

महाकुम्भ 2025 ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना जाति, पंथ, भाषा, क्षेत्र और रंग जैसे कृत्रिम विभाजनों से परे है। एक ऐसे समय में जब विभाजनकारी ताकतें समाज को पहचान की राजनीति और सामाजिक वर्गीकरण के माध्यम से बांटने की कोशिश कर रही हैं, महाकुम्भ का यह दिव्य आयोजन उनके हर झूठे नैरेटिव का उत्तर बनकर खड़ा हो गया। यहां हिमालय से आए संत तमिलनाडु के भक्तों के साथ ज्ञान साझा करते हैं, वाराणसी का विद्वान महाराष्ट्र के श्रमिक के साथ वैदिक मंत्रोच्चार करता है और एक दलित संन्यासी, ब्राह्मण पुजारियों के साथ शोभायात्रा में अग्रणी भूमिका निभाता है।

महाकुम्भ संपूर्ण विश्व को यह संदेश देता है कि सनातन धर्म की नींव 'वसुधैव कुटुंबकम' पर टिकी है जिसका अर्थ है कि संपूर्ण विश्व एक परिवार है।

औपनिवेशिक शक्तियों और भारत विरोधी ताकतों ने यह झूठा प्रचार किया कि भारत जाति और क्षेत्रीय पहचान के आधार पर विभाजित समाज है, जबकि इसकी वास्तविकता आध्यात्मिक एकता में निहित है। महाकुम्भ 2025 इस झूठ को पूरी तरह खंडित कर देता है, क्योंकि यह भारतीय सभ्यता की समावेशिता का जीवंत प्रमाण बनकर उभरा है। आधुनिक संस्थान जहां अभी भी सच्ची समानता के लिए संघर्ष कर रहे हैं, वहीं महाकुम्भ बिना किसी भेदभाव के संचालित होता है जहां सबसे अमीर और सबसे गरीब एक साथ पवित्र जल में डुबकी लगाते हैं, न कि सांसारिक संपत्ति के लिए, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति के लिए। महाकुम्भ में एक साथ गूंजने वाले संस्कृत मन्त्रों, प्रांतीय भाषाओं के भजनों-लोकगीतों ने यह प्रमाणित कर दिया कि भाषाई विविधता हमें विभाजित नहीं करती है बल्कि यह वैविध्य एकात्मता को संजोए भारत की सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग है।

आधुनिक संस्थान जहां अभी भी सच्ची समानता के लिए संघर्ष कर रहे हैं, वहीं महाकुम्भ बिना किसी भेदभाव के संचालित होता है जहां सबसे अमीर और सबसे गरीब एक साथ पवित्र जल में डुबकी लगाते हैं, न कि सांसारिक संपत्ति के लिए, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति के लिए।

इस अद्भुत, भव्य और दिव्य आयोजन को देखकर सम्पूर्ण विश्व हतप्रभ है, जो बिना किसी आमन्त्रण के, बिना किसी बाहरी नियंत्रण के, केवल आस्था और सद्भाव के बल पर संचालित होता है। यह प्रमाण है कि भारत कभी भी विभाजित नहीं था बल्कि इसे कृत्रिम रूप से विभाजित करने का दुष्प्रयास किया गया। यह आयोजन इस बात का जीवंत प्रमाण है कि किस प्रकार एक प्राचीन एवं जैविक रूप से विकसित हुई समावेशी संस्कृति बिना किसी दबाव या संघर्ष के समाज के हर वर्ग को सहजता से एकीकृत कर सकती है।

आज जब दुनिया पहचान की राजनीति और आंतरिक कलह से जूझ रही है, महाकुम्भ शाश्वत संदेश देता है कि सच्ची एकता कोई थोपी हुई अवधारणा नहीं है- यह तब स्वाभाविक रूप से प्रकट होती है जब कोई सभ्यता अपनी आध्यात्मिक जड़ों से जुड़ी रहती है। करोड़ों लोगों का एकात्मरूप यह महासंगम, जो सत्य की खोज में एकत्र होता है, पूरी दुनिया को यह संदेश देता है- भारत मात्र एक जमीन का टुकड़ा नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति से उद्भूत राष्ट्र है, जिसकी आत्मा को कोई भी शक्ति विभाजित नहीं कर सकती। जिसकी चेतना का मूल स्वरुप ही आध्यात्मिक एकात्मता है।

हिन्दू चेतना के जागरण का शंखनाद :

हाल ही में सम्पन्न हुआ महाकुम्भ 2025 केवल आस्था और परंपरा का पर्व नहीं था, बल्कि यह हिन्दू चेतना के जागरण का शंखनाद भी था। जिस तरह काशी विश्वनाथ धाम पुनर्निर्माण ने सैकड़ों वर्षों की दासता की बेड़ियों को तोड़कर सनातन संस्कृति के गौरव को पुनर्स्थापित किया और राम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण ने करोड़ों हिन्दुओं की आस्था को साकार किया, उसी तरह महाकुम्भ 2025 हिन्दू समाज को आत्मगौरव, एकता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रेरणा दे गया। इस आयोजन ने सिद्ध किया कि कैसे भारत अपनी सांस्कृतिक जड़ों की ओर लौटते हुए विश्वगुरु बनने की दिशा में अग्रसर हो रहा है। महाकुम्भ का विराट संगम उस चिरंतन सनातन सत्य का साक्षी बना, जिसमें हर हिन्दू बिना किसी भेदभाव के अपने पूर्वजों की परंपराओं से जुड़ा और उसने धर्म के मूलभूत आदर्शों को आत्मसात किया।

भारत का युवा वर्ग, जो आज वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है, इस महाकुम्भ में अपनी सनातन आस्था को और प्रबल कर सका। यह आयोजन एक सांस्कृतिक क्रांति का प्रतीक बना है, जो भारत के युवाओं को बोध कराता रहेगा कि अपनी गहरी और मजबूत जड़ों से सिंचित सनातन हिन्दू धर्म मात्र अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य का आधार है, जो पूरी मानवता के कल्याण का संदेश देता है। ■

हर त्योहार नई शुरुआत

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर, ट्रैवलर

पूर्वोत्तर भारत में चैत्र महीने की षष्ठी को "चैती छठ" मनाया जाता है। इसमें परिवार नदी में स्नान करके, वहां वेदी बनाकर पूजा का कलश स्थापित करता है और सूर्य को अर्घ देता है। चैत्र नवरात्रों में नदी में अष्टमी स्नान किया जाता है। मेला लगता है। नवमीं को कन्यापूजन कर, नवरात्र व्रत का पारण करके भगवान श्रीराम का अवतरण दिवस रामनवमी (6 अप्रैल) पूरे भारत में श्रद्धा और हर्षोलास से मनायी जाती है। नवरात्र के नौ दिन शाकाहार, अल्पहार, उपवास, नियम, अनुशासन से आने वाले मौसम परिवर्तन के लिए लोग अपने शरीर को तैयार करते हैं।

जब ट्यूलिप की कलियां खिलने को तैयार होती हैं तब श्रीनगर का ट्यूलिप महोत्सव (1 से 30 अप्रैल) मनाया जाता है। हर वर्ष मौसम इस महोत्सव की तारीखें तय करता है। उगादी के बाद से दक्षिण भारत में आम, कैरी खाना शुरु हो जाता है। उत्तर पूर्व भारत के नागालैंड के मोन जिले में आओलिंग महोत्सव (1 से 6 अप्रैल) कोन्याक जनजातियों का पर्व है जो बसंत के स्वागत में मनाया जाता है।

मोपिन महोत्सव (5 अप्रैल) अरूणाचल प्रदेश का आनन्दायक उत्सव है। यह भी फसल उत्सव है। जैन धर्म के 24वें तीर्थकंर भगवान महावीर के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में महावीर जयंती 10 अप्रैल को मनाई जायेगी।

बैसाखी उत्सव फसल कटाई समय को दर्शाता है और ऐसा माना जाता है कि माँ गंगा बैसाखी को धरती पर अवतरित हुई थीं इसलिए इस दिन गंगा स्नान का महत्व है जो गंगाजी नहीं पहुंच सकते वे अपने आस पास की नदियों में स्नान करते हैं।

हनुमान जयंती (12 अप्रैल) मंदिरों में सुदंरकाण्ड पाठ और भण्डारों के साथ हर्षोल्लास से मनाई जाती है। 13 अप्रैल 1699 को श्री केसरगढ़ साहिब आनन्दपुर में दसवें गुरु गोविंद सिंह द्वारा खालसा पंथ की स्थापना के उपलक्ष्य में गुरुद्वारों में समारोह होते हैं। बैसाखी उत्सव फसल कटाई समय को दर्शाता है और ऐसा माना जाता है कि माँ गंगा बैसाखी को धरती पर अवतरित हुई थीं इसलिए इस दिन गंगा स्नान का महत्व है जो गंगाजी नहीं पहुंच सकते वे अपने आस-पास की नदी पर जाते हैं।

पूर्वोतर भारत का मुख्य रोजगार चाय बगान है, साथ ही हथकरघे का काम भी होता है। महिलाएं खेती के साथ कपड़ा भी बुनती हैं। यहां बैसाख यानि अप्रैल में मनाया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण पर्व बिहु है। यह भी बसन्त के सौन्दर्य और प्रकृति का पूजन है। इस पर्व को रोंगाली बिहू या बोहाग बिहू (14 से 20 अप्रैल) भी कहते हैं। इस पर्व में खाना-पीना और नृत्य चलता है। रेशमी मेखला पोशाक धारण कर पुरुष विश्व विख्यात गोल्डन मूंगा सिल्क का गमछा गले में पहनकर नृत्य करते हैं। बिहू पर्व भी भारत की सामाजिक समरसता को दर्शाता है जिसमें जाति-वर्ग, धनी-निर्धन का कोई भेदभाव नहीं होता है, सभी साथ मिलकर इसे मनाते हैं।

शाद सुक मिंसिएम उत्सव (14 अप्रैल) मेघालय का लोकप्रिय त्योहार है। यह भी फसल कटाई की खुशी का पर्व हैं। यहां भी खासी पुरूष और महिलाएं पारंपरिक रेशमी वेशभूषा और आभूषणों से सजकर नृत्य करते हैं। इसे थैंक्सगिविंग फैस्टिवल (प्रकृति के प्रति धन्यवाद) के नाम से भी जाना जाता है।

उत्तराखण्ड में बिखोती उत्सव मनाया जाता है जिसमें पवित्र नदी में स्नान करके नकारात्मकता के प्रतीक राक्षस को पत्थर मारने की प्रथा है।

यूनेस्को द्वारा 2016 में मानवता की सांस्कृतिक विरासत के रुप में दर्ज पाहेला वैशाख पर बंगाल, त्रिपुरा, बांगलादेश में मंगल शोभा जात्रा का आयोजन होता है। झारखण्ड के आदिवासी सरहुल मनाते हैं और सरना देवी की पूजा करते हैं। उसके बाद से नया धान, फल, फूल खाते हैं और बीज बोया जाता है। यह माँ प्रकृति की पूजा और बसंत का उत्सव है जो प्रजनन का भी संकेत देता है। इस अवसर पर विवाह प्रारंभ होते हैं। मैथिल नववर्ष जुरशीतल पर्व (14 अप्रैल) भारत और नेपाल क्षेत्र में मैथिलों द्वारा मनाया जाता है। मैथिल इस दिन भात और बारी (बेसन की सरसों के तेल में छनी) और गुड़ वाली पूरी बनाते हैं। पाना संक्राति, महा बिशुबा संक्राति, उड़िया नुआ बरसा, उड़िया नववर्ष का सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक उत्सव है। इस समारोह का मुख्य आर्कषण मेरु जात्रा, झामु जात्रा और चाडक पर्व है। कहीं-कहीं पर छाऊ नृत्य, लोक नृत्य समारोह होता है। तमिल नववर्ष को पुथांडु उत्सव कहते हैं। तमिल महीने चितराई के पहले दिन पुथांडु, तमिलनाडु, पांडीचेरी, श्रीलंका, मलेशिया, सिंगापुर, मारीशियस में और विश्व में जहां भी तमिल हैं मनाया जाता है। यह आमतौर पर 14 अप्रैल को पड़ता है। इस दिन को तमिल नववर्ष या पुथुवरुशम के नाम से भी जाना जाता है। यह त्यौहार परिवार के सभी लोग एक साथ मिलकर मनाते हैं। घर की सफाई, फूलों और लाइटों से सजावट करके, पवित्र स्नान कर, नये वस्त्र धारण कर लोग मंदिर जाते हैं। घरों में शाकाहारी भोजन वडा, पायसम खासतौर पर 'मैंगो पचड़ी' बनाया जाता है। मान्यता है कि इस दिन देवी मीनाक्षी ने भगवान सुन्दरेश्वर से विवाह किया था।

केरल का नववर्ष मलियाली महीने मेदान के पहले दिन 'विशु' मनाया जाता है। इसे 14 या 15 अप्रैल को परिवार के साथ मनाते हैं। यह पर्व भगवान विष्णु और उनके अवतार कृष्ण को समर्पित है। पिछली फसल के लिए भगवान का धन्यवाद किया जाता है और नये धान की बुआई की जाती है। परिवार के बुजुर्ग विशुकानी (विष्णु की झांकी) सजाते हैं। सुबह बच्चों की आंखों को ढक कर परिवार का बड़ा बच्चे को विशुकानी के सामने लाकर आंखों से हाथ हटा लेता है अर्थात् सुबह सबसे पहले भगवान के दर्शन करते हैं। बुजुर्ग बच्चों को विषुक्कणी (भेंट) देते हैं। सब मंदिर जाते हैं। सब विषु भोजन करते हैं जिसमें 26 प्रकार का शाकाहारी भोजन होता है। इतने प्यारे फसलों के त्यौहार जिसमें सुस्वादु भोजन बनते हैं, यह पर्व नौकरी के कारण परिवार से दूर गए सदस्यों को भी अतिव्यस्त होने पर भी कुटुंब में आने को प्रेरित करते हैं। कदम्मनिता पदयानी (14 से 23 अप्रैल) त्यौहार केरल में राज्य की समृद्ध संस्कृति एवं सौन्दर्ययुक्त परंपराओं और रंगों का पर्व है।

भारतीय संविधान के पिता भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर की जयन्ती 14 अप्रैल को धूमधाम से मनायी जाती है। कोल्लम पूरम (15 अप्रैल), कोल्लम के आश्रमम मैदान में एक सप्ताह तक चलने वाले इस उत्सव के दौरान मंदिर की मूर्ति को एक भव्य पालकी पर ले जाया जाता है। जिसके पीछे भक्त अनुष्ठान करते हैं। नर्तक और संगीतकार अपनी कला के द्वारा श्रद्धांजलि देते हैं। सजे हुए हाथी इसे सबसे लोकप्रिय उत्सव बनाते हैं।

विशु पर्व पर परिवार के बुजुर्ग विशुकानी (विष्णु की झांकी) सजाते हैं। सुबह बच्चों की आंखो को ढक कर परिवार का बड़ा बच्चे को विशुकानी के सामने लाकर आंखों से हाथ हटा लेता है अर्थात् सुबह सबसे पहले भगवान के दर्शन करते हैं।

संकटमोचन संगीत महोत्सव (16 से 21 अप्रैल), हनुमान जयंती के अवसर पर वाराणसी के घाट पर आयोजित किए जाने वाले इस वार्षिक संगीत महोत्सव में देश के लोकप्रिय शास्त्रीय संगीतकारों को सुनने का आनन्द मिलता है।

गरिया पूजा (20 अप्रैल) त्रिपुरा में सात दिन तक चलने वाला उत्सव है। इसमें गरिया देवता की पूजा होती है जो पशुधन और धन की रक्षा करते हैं। वरुथिनी एकादशी (26 अप्रैल) के दिन भगवान श्री हरिहर विष्णु की पूजा की जाती है। ऐसा मानना है कि कुरूक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय जो एक मन सोना दान करके पुण्य मिलता है, वही पुण्य इस दिन व्रत करने से मिलता है। इस वर्ष संत श्री वल्लभाचार्य जी की 546वीं जयन्ती मनाई जायेगी।

परशुराम जयंती (29 अप्रैल), महर्षि परशुराम के सम्मान में इस दिन को उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति करने के लिए जीवन की सुख-सुविधाओं का त्याग करने के तरीके के रूप में मनाया जाता है। इसको अक्षय तृतीया भी कहा जाता है, जो भारतीय संस्कृति में अत्यंत शुभ दिवस है।

बसव जयंती (30 अप्रैल) लिंगायत समुदाय द्वारा पारंपरिक रूप से मनाई जाने वाली संत बसवन्ना की जयंती है जो 12वीं सदी के शिवभक्त कन्नड़ कवि और दार्शनिक थे। दस महाविद्या में नवीं महाविद्या के रूप में देवी मातंगी की पूजा भी इसी मास में होती है। इनके पूजन से वैवाहिक जीवन सुखी रहता है। इस दिन कन्या पूजन भी किया जाता है।

हिन्दू राष्ट्र की अंगड़ाई लेता नेपाल

डॉ. मनमोहन सिंह शिशोदिया
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

नेपाली जनमानस का मन हिन्दू राष्ट्र की अपनी खोई पहचान पुनः प्राप्त करने के लिए मचल रहा है। चीन के प्रभाव से राजशाही के खत्म होने और दुनिया के इकलौते हिन्दू राष्ट्र से पंथनिरपेक्ष बनने के बाद नेपाल के माओवादी दलों ने नेपालियों को चीन केंद्रित विकास के जो सब्जबाग दिखाए थे, वे वास्तव में मृग मरीचिका ही सिद्ध हुए हैं। नेपाल में संवैधानिक राजतंत्र और हिन्दू पहचान के खात्मे को लेकर जहां चीन समर्थित वामपंथी दलों का भरपूर योगदान रहा, वहीं भारत के वामपंथियों का दखल तथा ज्ञानेन्द्र शाह की घटती लोकप्रियता भी इसका एक अहम कारण बनी। जनसंख्या की दृष्टि से नेपाल में 81.2 प्रतिशत हिन्दू, 8.2 प्रतिशत बौद्ध, 5.1 प्रतिशत मुस्लिम तथा 1.8 प्रतिशत ईसाई हैं। भारत-नेपाल संबंधों की गहराई का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि भारत-नेपाल की लगभग 1751 किमी अंतर्राष्ट्रीय सीमा आवाजाही के लिए खुली है, जो भारत के उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल तथा सिक्किम राज्यों को छूती है। इतिहास गवाह है कि नेपाल और भारत के सम्बन्ध केवल व्यापारिक न होकर सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक और रोटी-बेटी के रहे हैं। जहां भारत में लगभग 30–40 लाख नेपाली रहते हैं वहीं नेपाल में भी 4 लाख से अधिक भारतीय रहते हैं। दोनों देशों का धर्म, दर्शन, संगीत, भाषा, पूजा-पद्धति, संयुक्त परिवार प्रथा आदि समान हैं। नेपाल में यह भावना पनप रही है कि वहां इस्लाम, ईसाईयत तथा चीनी सभ्यता के बढ़ावे से मूल नेपाली संस्कृति नष्ट-भ्रष्ट हो रही है। नेपाली जनमानस इसे नेपाली संस्कृति को धूल में मिलाने के अन्तर्राष्ट्रीय षड़यंत्र के रूप में देख रहा है।

राजतंत्र खत्म होने के बाद से पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह केवल विशेष त्योहारों एवं अवसरों पर ही बयान देते थे। परंतु पिछले कुछ समय से वह लगातार नेपाल का भ्रमण कर जनता के साथ हमदर्दी दिखा रहे हैं। वहीं नेपाली जनता भी अपने किए पर पछताते हुए उन्हें आंखों पर बिठा रही है। 9 मार्च को ज्ञानेन्द्र शाह का काठमांडू के त्रिभुवन हवाई

अड्डे पर बड़ी संख्या में लोगों ने स्वागत किया और राजतंत्र की वापसी तथा नेपाल को पुनः हिन्दू राष्ट्र घोषित करने की मांग की। इस रैली में लोग नारा लगा रहे थे- 'नारायणहिटी खाली गर, हाम्रो राजा आउँदै छन्' यानी नारायणहिटी खाली करो, हमारे राजा आ रहे हैं, 'राज महल को राजा के लिए खाली करो', 'राजा वापस आओ नेपाल बचाओ', 'हमें राजतंत्र चाहिए'। इन नारों में नेपाल की जनता की कुंठा, निराशा और सरकार के प्रति अविश्वास और आक्रोश साफ झलकता है। इसके विपरीत नेपाल का बड़ा वर्ग वहां लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित करने को उनकी मूल पहचान मिटाने के लिए किया गया छलावा मानने लगा है। नई व्यवस्था से न तो राजनीतिक स्थिरता आई, न ही अर्थव्यवस्था सुधरी और न ही भ्रष्टाचार पर लगाम लग सकी। वर्ष 2008 में राजतंत्र की समाप्ति के बाद नेपाल में 13 सरकारें बदलना स्वयं नेपाल की दुर्दशा और लोगों की आशाओं पर हुये तुषारापात की कहानी बयां करता है। राजशाही की वापसी के लिए हो रहे प्रदर्शनों में सभी आयु वर्ग, व्यवसायों तथा संप्रदायों के लोगों सहित मुस्लिम भी भाग ले रहे हैं। प्रधानमंत्री के.पी. ओली की कम्युनिस्ट सरकार ने भारत-नेपाल संबंधों के विकल्प के रूप में चीन के साथ संबंधों को मजबूत किया। इन्होने भारत के कालापानी, लिंपियाधुरा तथा लिपुलेख को नेपाल के नक्शे में प्रदर्शित करने जैसे विवादित कार्यों से चीन को साधने, भारत को भड़काने और स्वयं को राष्ट्रवादी नेता के रूप में स्थापित करने का असफल प्रयास किया। परन्तु यह वास्तविकता है कि हम दोस्त बदल सकते हैं पर पादौसी नहीं। नेपाल भारत के बीच परस्पर खुली सीमाएं सुरक्षा एवं सामरिक दृष्टि से भी अहम है। नेपाल में भारत विरोधी सरकार होने से नेपाली भूमि का दुरुपयोग भारत को अस्थिर करने में होने की संभावनाएं रहेंगी। हालांकि यह भी सत्य है कि नेपाली सरकार भले ही भारत विरोधी क्यूं न हो जाए, नेपाली जनता भारत के साथ थी, है और रहेगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि श्री अयोध्याधाम में प्रभु रामलला प्राण प्रतिष्ठा, काशी विश्वनाथ कॉरीडोर के निर्माण और भव्य महाकुम्भ के अनुपम आयोजन ने नेपाली जनता में भी 'स्व' के प्रति बोध जगाया है। भारत और नेपाल एक दूसरे के सहयोगी बनकर सांस्कृतिक अनुनाद पैदा कर दुनिया का दीप-स्तम्भ बन सकते हैं। किन्तु मात्र राजतंत्र की पुनर्स्थापना नेपाल के लिए रामबाण औषधि शायद ही सिद्ध हो। नेपाली नेतृत्व को लचर स्वास्थ्य सुविधाओं, अशिक्षा, पलायन, गरीबी, बेरोजगारी, प्राकृतिक आपदा जैसी चुनौतियों से पार पाने के साथ ही ड्रैगन के चंगुल से बचने के जमीनी प्रयास करने होंगे। (संदर्भ स्रोतों के प्रति आभार एवं कृतज्ञता)

भारतीय मेधा जिन्होंने विश्व में फहराया परचम

सुनीता विलियम्स

भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स ने अपने अदम्य साहस और संकल्प से पूरे भारत का सीना गर्व से चौड़ा कर दिया है। 5 जून 2024 को 8 दिनों के मिशन पर अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) के लिए रवाना हुईं सुनीता तकनीकी समस्याओं के कारण 9 महीने 14 दिन यानी 286 दिनों तक अंतरिक्ष में रहीं। इस दौरान उन्होंने पृथ्वी की 4,576 परिक्रमा की और कुल 121,347,491 मील की दूरी तय की।

अपने मिशन के दौरान, सुनीता ने 62 घंटे से अधिक समय तक स्पेसवॉक किया, जो किसी महिला अंतरिक्ष यात्री द्वारा किया गया सबसे लंबा समय है। उन्होंने अपने साथी बुच विल्मोर के साथ मिलकर 150 से अधिक वैज्ञानिक और तकनीकी प्रयोग किए। इन प्रयोगों में पौधों का अंतरिक्ष में विकास, स्टेम सेल तकनीक का अध्ययन, ऑटोइम्यून बीमारियों, कैंसर और रक्त से जुड़ी बीमारियों पर अनुसंधान शामिल हैं, जो भविष्य में चिकित्सा क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होंगे।

सुनीता और उनकी टीम ने अंतरिक्ष स्टेशन की मरम्मत, उपकरणों के अद्यतन और माइक्रोग्रेविटी तथा फ्यूल सेल रिएक्टर पर भी महत्वपूर्ण प्रयोग किए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुनीता को 'आइकन' मानते हुए उन्हें बधाई दी और कहा कि भारत 2035 तक अपना अंतरिक्ष स्टेशन बनाएगा और 2040 तक भारतीय अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा पर कदम रखेंगे।

सुनीता विलियम्स की यह यात्रा न केवल अंतरिक्ष अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान है, बल्कि यह साहस, धैर्य और संकल्प की मिसाल भी है, जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

अकृत जसवाल

जब अधिकांश बच्चे खिलौनों से खेल रहे होते हैं, तब कुछ असाधारण प्रतिभाएं दुनिया को चौंकाने वाले कारनामे कर रही होती हैं। ऐसी ही एक विलक्षण प्रतिभा हैं अकृत जसवाल, जिन्होंने महज 7 साल की उम्र में पहली बार एक सर्जरी कर दुनिया को चौंका दिया था। 23 अप्रैल 1993 को भारत में जन्मे अकृत का IQ 146 मापा गया, जो उस समय उनके आयु वर्ग के बच्चों में सबसे अधिक था। चिकित्सा के प्रति उनकी रुचि बचपन से ही विकसित हो गई थी, जब उन्होंने अपने गाँव में सर्जनों को ऑपरेशन करते देखा और चिकित्सा तकनीकों को समझना शुरू किया।

सिर्फ 7 साल की उम्र में, अकृत ने एक 8 साल की बच्ची की सर्जरी की, जिसकी उंगलियां जलने के कारण आपस में चिपक गई थीं। उसके माता-पिता महंगी चिकित्सा प्रक्रिया का खर्च उठाने में असमर्थ थे, तब अकृत ने अपने ज्ञान और कौशल का उपयोग करके उसकी उंगलियां सफलतापूर्वक अलग कर दीं। अकृत की प्रतिभा सिर्फ चिकित्सा तक सीमित नहीं थी। 12 साल की उम्र में वे चंडीगढ़ कॉलेज में विज्ञान की पढ़ाई करने वाले सबसे युवा छात्र बने। उनकी बुद्धिमत्ता और उपलब्धियों के कारण वे 13 साल की उम्र में ओपरा विनफ्रे शो में भी शामिल हुए। 17 साल की उम्र तक वे एप्लाइड केमिस्ट्री में मास्टर डिग्री हासिल करने की राह पर थे और 20 साल की उम्र तक चिकित्सा क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्यरत हो गए।

उनका सपना है कि वे कैंसर के लिए एक सस्ता और प्रभावी इलाज खोज सकें, जिससे हजारों मरीजों को नई जिंदगी मिल सके। अकृत जसवाल की कहानी साबित करती है कि अगर जुनून और कड़ी मेहनत हो, तो कोई भी असंभव कार्य संभव किया जा सकता है।

आर्यन शुक्ला

महाराष्ट्र के 14 वर्षीय आर्यन शुक्ला, जिन्हें 'मानव कैलकुलेटर' कहा जा रहा है, ने हाल ही में दुबई में आयोजित एक मानसिक गणित प्रतियोगिता में अपनी अद्वितीय प्रतिभा से विश्व को चौंका दिया। उन्होंने एक ही दिन में छह गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ दिए, जिससे उनका नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया। इस तकनीक को 'फ्लैश अंजान' कहा जाता है, जहां आपको बिजली की गति से स्क्रीन पर चमकती संख्याओं को संसाधित करना होता है। इसका आधार अबेकस है। मैं इसे हासिल करने के लिए पिछले आठ वर्षों से प्रशिक्षण ले रहा हूँ।'

छह विश्व रिकॉर्ड जो बनाए इतिहास: आर्यन शुक्ला ने मानसिक गणित में निम्नलिखित छह विश्व रिकॉर्ड अपने नाम किए-

1.) 100 चार अंकों की संख्याओं को जोड़ने का सबसे तेज समय - 30.9 सेकंड। **2.)** 200 चार अंकों की संख्याओं को जोड़ने का सबसे तेज समय - 1 मिनट 9.68 सेकंड। **3.)** 50 पाँच अंकों की संख्याओं को जोड़ने का सबसे तेज समय - 18.71 सेकंड। **4.)** 20 अंकों की संख्या को 10 अंकों की संख्या (10 का सेट) से विभाजित करने का सबसे तेज़ समय - 5 मिनट 42 सेकंड। **5.)** दो पाँच अंकों की संख्याओं के 10 सेट को गुणा करने का सबसे तेज़ समय - 51.69 सेकंड। **6.)** दो आठ अंकों की संख्याओं के 10 सेट को गुणा करने का सबसे तेज़ समय - 2 मिनट 35.41 सेकंड।

नैरेटिव को न्योता देती पुस्तक

सुभाष चन्द्र सिंह
पूर्व सूचना आयुक्त, उत्तर प्रदेश

'विमर्श भारत का' पुस्तक देश में दशकों से चल रहे समाज से कटे वामपंथी और फर्जी सेक्युलर विमर्श पर कड़ा प्रहार करती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने 10 मार्च को नोएडा में टीवी चैनल न्यूज 24 की प्रधान संपादक श्रीमती अनुराधा प्रसाद की विशिष्ट उपस्थिति में विमोचन किया।

पुस्तक मुख्य रूप से प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा के तत्वावधान में आयोजित चार विमर्शों की श्रृंखला में आए विचारों का संकलन है। ये विमर्श 2020, 21, 22 और 23 में नोएडा और ग्रेटर नोएडा में आयोजित किए गए थे। विमर्श के क्रम में राष्ट्रीय स्तर नामचीन बुद्धिजीवियों, पत्रकारों, सिने कलाकारों, सामाजिक हस्तियों और राष्ट्रवादी सोच से प्रेरित लोगों ने विचार व्यक्त किए। इसमें देशभर से जुटे नवोदित पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता, बौद्धिक और सेवा क्षेत्र से जुड़े लोगों ने हिस्सेदारी की और राष्ट्रवादी विचारों से लाभान्वित हुए।

पुस्तक में सभी चार विमर्शों में आए विचारों को अलग अलग रेखांकित किया गया है। इसका पहला हिस्सा 2020 के विमर्श पर केंद्रित है। विषय था 'विरासत'। इसमें विद्वानों ने भारत की विरासत के आधारभूत तत्वों पर केंद्रित किया। लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह श्री अरुण कुमार के विचार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके अलावा संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख राम लाल जी,संघ के ही वरिष्ठ प्रचारक अशोक बेरी जी, भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री शिव प्रकाश, पूर्व वाइस चांसलर सर्व श्री रजनीश शुक्ल, भगवती प्रकाश शर्मा के अलावा पत्रकारिता जगत के हस्ताक्षर सर्वश्री आलोक मेहता, जगदीश उपासने, हितेश शंकर, सुरेश चव्हाणके आदि के विचार विशेष रूप से पठनीय हैं।

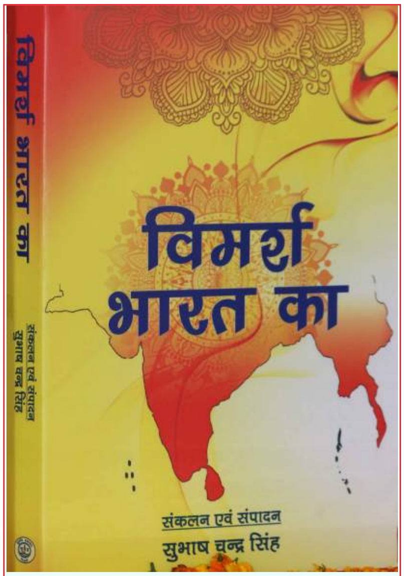

पुस्तक का नाम - विमर्श भारत का
पृष्ठ -225
मूल्य - रुपए 225/
प्रकाशन - सुरुचि प्रकाशन
केशव कुंज झंडेवाला
नई दिल्ली- 110055
फोन - 011 23514672
मो. - 8851358634
Suruchiprakashan@gmail.com
www.suruchiprakashan.com

वर्ष 2021 के विमर्श का विषय था 'भारतोदय, आजादी का अमृत महोत्सव'। इसमें स्वतंत्रता के अंतर्निहित मूल्यों के आलोक में चर्चा हुई। विशेष रूप से राज्यसभा सदस्य श्री राकेश सिन्हा, सच्चिदानंद जोशी और पूर्व कुलपति संजीव शर्मा के अलावा वरिष्ठ पत्रकार विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, हर्ष वर्धन त्रिपाठी के विचारों से पुस्तक को वैचारिक समृद्धि मिली।

विमर्श 2022 में 'भविष्य का भारत' विषयक चर्चा में देश की मूर्धन्य विभूतियों ने हिस्सा लिया। विशेष उल्लेख प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय संयोजक जे नंद कुमार का करना समीचीन होगा। उन्होंने भारत के स्वत्व-बोध को जीवन के हर क्षेत्र में जरूरी बताया। पूर्व केंद्रीय सूचना आयुक्त और वरिष्ठ पत्रकार उदय माहुरकर, अवधेश कुमार, बृजेश सिंह, प्रोफेसर संजय द्विवेदी और डॉ.प्रमोद सैनी के विचार अवश्य पढ़ना चाहिए।

वर्ष 2023 में विमर्श का विषय रखा गया,'स्व' भारत का आत्मबोध। इसमें भी संघ के वरिष्ठ प्रचारक और प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय संयोजक जे नंद कुमार जी का मार्गदर्शन मिला। उन्होंने आध्यात्मिकता के विचार-सूत्र को भारत के स्वबोध की आधारशिला बताया। कई सत्रों की चर्चा में निकले विचार-नवनीत का लाभ देशभर के जुटे लोगों को मिला। वरिष्ठ पत्रकार एवं कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता व जनसंचार विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ के पूर्व कुलपति श्री बलदेव भाई शर्मा और माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति केजी सुरेश के अलावा मीडिया के चर्चित नाम नरेंद्र भदौरिया, प्रफुल्ल केतकर, रुबिका लियाकत, अशोक श्रीवास्तव, प्रणय कुमार, हरीश वर्णवाल आदि के उल्लेखनीय विचार पढ़ना चाहिए।

पुस्तक का मुखपृष्ठ अति सुंदर है। विचार प्रवाह का साक्षी है। 225 पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य मात्र 225 रुपये है। इसे आप सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज, झंडेवाला, नई दिल्ली से डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

'विमर्श भारत का' पुस्तक विमोचन की झलकियां

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25